RNI No. DELHIN/2012/48773

₹50

मासिक, विशेषांक 2019

वर्ष 8, अंक 3

फेम इंडिया

सोच बदलें, समाज बदलेगा

धाकड़ नेता

एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे

SHAMBHU'S FOUNDATION

(To creat Endless Happiness)

Address -
D Block - sector -50 ,
Noida -201304 (Delhi NCR)

Contact -
+91-9911976808
Email ID - info@shambhuafoundation.in
Website- www.shambhusfoundation.in

फेम इंडिया

www.fameindia.co

वर्ष 8, अंक 3, विशेषांक 2019

मैनेजिंग डायरेक्टर / एडिटर इन चीफ - राज श्री
चीफ एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर - उमाशंकर सोंथालिया
चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर - शंकर सोंथालिया
मैनेजिंग एडिटर / एक्जीक्यूटिव डॉयरेक्टर - श्वेता श्री
एक्जीक्यूटिव डॉयरेक्टर - राघवेश अस्थाना

एसोसिएट एडिटर - धीरज कुमार
नेशनल ब्यूरो हेड - दीपाली श्रीवास्तव
रेजिडेंट एडिटर - डॉ विष्णु रजगढ़िया
आर्ट डायरेक्टर - स्वर्ण लता

एडिटोरियल टीम -
शत्रुघ्न प्रसाद
सुधा उपाध्याय
आनंद वर्मा
हेमंत सिंह
मिथिलेश पाठक
अंजू राजपूत
मनजीत सिंह
नंदन झा

सेल्स - नीतू चौधरी
मार्केटिंग - पंकज तिवारी
सर्कुलेशन - प्रवीण मिश्रा

वेब टीम - रश्मि सिंह

फोटो रिसर्चर - राजेश वर्मा

लीगल एडवाइजर - शरद चंद्र झा

(स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजश्री द्वारा ज्योति प्रिंटर्स, ई-94, सेक्टर 6, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर से मुद्रित एवं ए-533, जीडी कालोनी, मयूर विहार फेज-3, दिल्ली से प्रकाशित, संपादक - राज श्री)

संपादकीय एवं मार्केटिंग ऑफिस
फेम इंडिया पब्लिकेशन प्रा.लि।
762,ब्लाक-एफ 8, सेक्टर-50, नोएडा 201304 (उ.प्र.)
फोन नं. - +91-7004450124

ईमेल: info@fameindia.co

RNI No. DELHIN/2012/48773

संपादकीय

आलोचना सुनने का धैर्य ही बनाता है किसी को धाकड़

विश्वसनीयता किसी भी नेता का वह प्राथमिक गुण है जो अगर न हो तो दूसरे सभी गुण बेकार हैं। नेता का व्यक्तित्व अगर विश्वास करने योग्य न हो, न तो उसकी विनम्रता प्रभावित करेगी और न ही निर्णय लेने की क्षमता। मौजूदा वक्त में जब राजनीतिज्ञों की विश्वसनीयता आम तौर पर निम्नतम स्तर है, तब नेताओं के लिए यह और भी जरूरी है कि वे अपने को विश्वसनीय बनाने के लिए अतिरिक्त प्रयास करें।

लोकतंत्र में जनता स्वाभाविक तौर पर अपेक्षा करती है उनके प्रतिनिधि नियमित रूप से उसके बीच दिखाई दें। जब से राजनीतिज्ञों ने सुरक्षा के नाम पर अपने को जनता से काट लिया है और सत्ता की सुरक्षा घेरे में कैद हैं, तब से लोगों में ऐसे राजनेताओं का आकर्षण बढ़ा है जो जनता के बीच दिखाई देते हैं। निसंदेह, आलोचकों की तरफ हाथ बढ़ाने का साहस और उन्हें सुनने का धैर्य ही बनाता है किसी को धाकड़।

दूसरी तरफ हमारे लोकतंत्र में आजादी के बाद नेताओं की औपचारिक शिक्षा पर अक्सर बहुत जोर नहीं दिया गया। न ही जनता ने नेताओं के ग्रेजुएट या पोस्ट ग्रेजुएट होने की कोई व्याकुल मांग की। इसका कारण यह था कि सरकार चलाने की बुद्धिमता को औपचारिक शिक्षा का मोहताज नहीं माना जाता था। इसके बावजूद संसद और विधानसभाओं में हमारे जनप्रतिनिधियों में शिक्षा का औसत स्तर लगातार बढ़ता गया है, और इसकी प्रशंसा की जानी चाहिए।

जनता ऐसे नेताओं को पसंद करती हैं जिनका हाथ बदलते समय की नब्ज पर हो और जो उसके हिसाब खुद को और सरकार की दिशा को बदल सकें। देश में बदलाव इतने बारीक और भिन्न स्तरों पर हो रहे हैं कि एक ही पुराने फ्रेम में जड़े नेताओं का आकर्षण खत्म हो गया है।

फेम इंडिया मैगजीन की पूरी टीम काफी समय से धाकड़ नेताओं का मूल्यांकन कर रही थी, सभी चुने गए नेताओं को ढेड़ सारी बधाई और शुभकामनाएं।

राजश्री

info@fameindia.co

धाकड़ नेता

नरेंद्र मोदी
सदी के ऐतिहासिक जन नायक
P 6-7

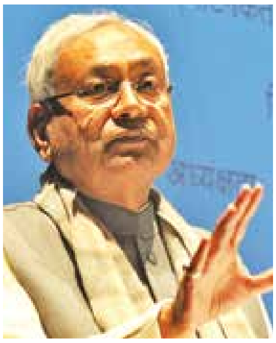

नीतिश कुमार
कुशल रणनीतिकार व विश्वस्त सहयोगी
P 10-11

योगी आदित्यनाथ
विशालतम प्रदेश के वैरागी राजर्षि
P 22-23

ममता बनर्जी
जमीन से जुड़ी फायरब्रांड राजनेता
P 30-31

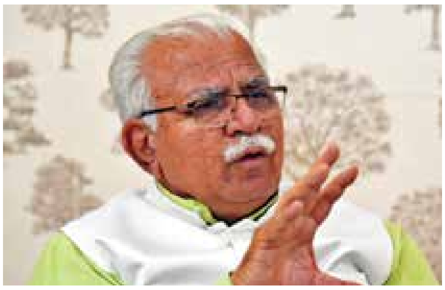

मनोहर लाल खट्टर
हरियाणा की कायापलट करने वाले बाजीगर
P 34-45

40-41
विजय रुपाणी
स्वच्छ छवि के सलीकेदार रणनीतिकार

48-49
मायावती
दलित राजनीति की समर्पित राजनीतिज्ञ

56
श्री एकादश रुद्र
मधुबनी में स्थापित है एकादश रुद्र महादेव का दुर्लभ मंदिर

त्याग, आचरण, व्यवहार और अपने कार्य से बनता है कोई धाकड़ नेता

राजीव मिश्रा
(एडिटर इन चीफ - एशिया पोस्ट व एमिटी टीवी)

लगभग ढाई हजार साल पहले चाणक्य के जमाने में लोकतंत्र नहीं था। जाहिर था कि वह ऐसा शख्स चुनें जिसमें नेतृत्व के जन्मजात गुण हों और जिसे प्रशिक्षण देकर राजा के कर्तव्यों के लिए तैयार किया जा सके। आज हमारे देश में लोकतंत्र है। जनता ही अपने शासक चुनती है। इस लिहाज से आज वोट डालने वाला हर नागरिक चाणक्य है। दूसरे शब्दों में, लोकतंत्र में नागरिकों के कंधों पर यह जिम्मेदारी है कि वे चाणक्य की तरह योग्य और होनहार व्यक्ति को सरकार की जिम्मेदारी संभालने के लिए चुनें।

एक अच्छा नेता सच्चा, समसामयिक, पारदर्शी, दूरदर्शी और सकारात्मक व्यक्तित्व वाला होता है। उसके पास एक मिशन, एक दर्शन, बलिदान, करुणा और प्रतिबद्धता की भावना होती है। लोगों के लिए अत्यंत प्रेम और करुणा का भाव नेतृत्व का प्रतिबिम्ब है। इसका अर्थ यह हुआ कि नेता बनने के गुण कुछ अंश तक हर व्यक्ति में छुपे होते हैं। हालांकि इसमें संदेह नहीं, इन गुणों को पोषित करना चुनौती है।

एक नेता के भीतर सबसे बड़ी खूबी होती है अपने उद्देश्यों के प्रति स्पष्ट संकल्प और उन्हें पाने के लिए हर समय तैयार रहना। क्योंकि नेता चाहे राजनीतिक, धार्मिक या सामाजिक कोई भी हो, उसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अपनी प्रतिबद्धताएं बताने की क्षमता हर व्यक्ति में अलग होती है। अधिकतर यह किसी के रुचियों अथवा अरुचियों पर निर्भर करती है, इसके बावजूद भी नेता को बिना किसी पक्षपात के एक ही मापक यंत्र से सबको मापना होता है। उसे सही समय पर उचित निर्णय लेने के लिए वांछित बुद्धिमत्ता की जरूरत होती है। इन सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद हमने निष्पक्ष ढंग से धाकड़ नेताओं को चुना है और सभी चुने गए नेता निश्चित तौर पर बधाई के पात्र हैं ।

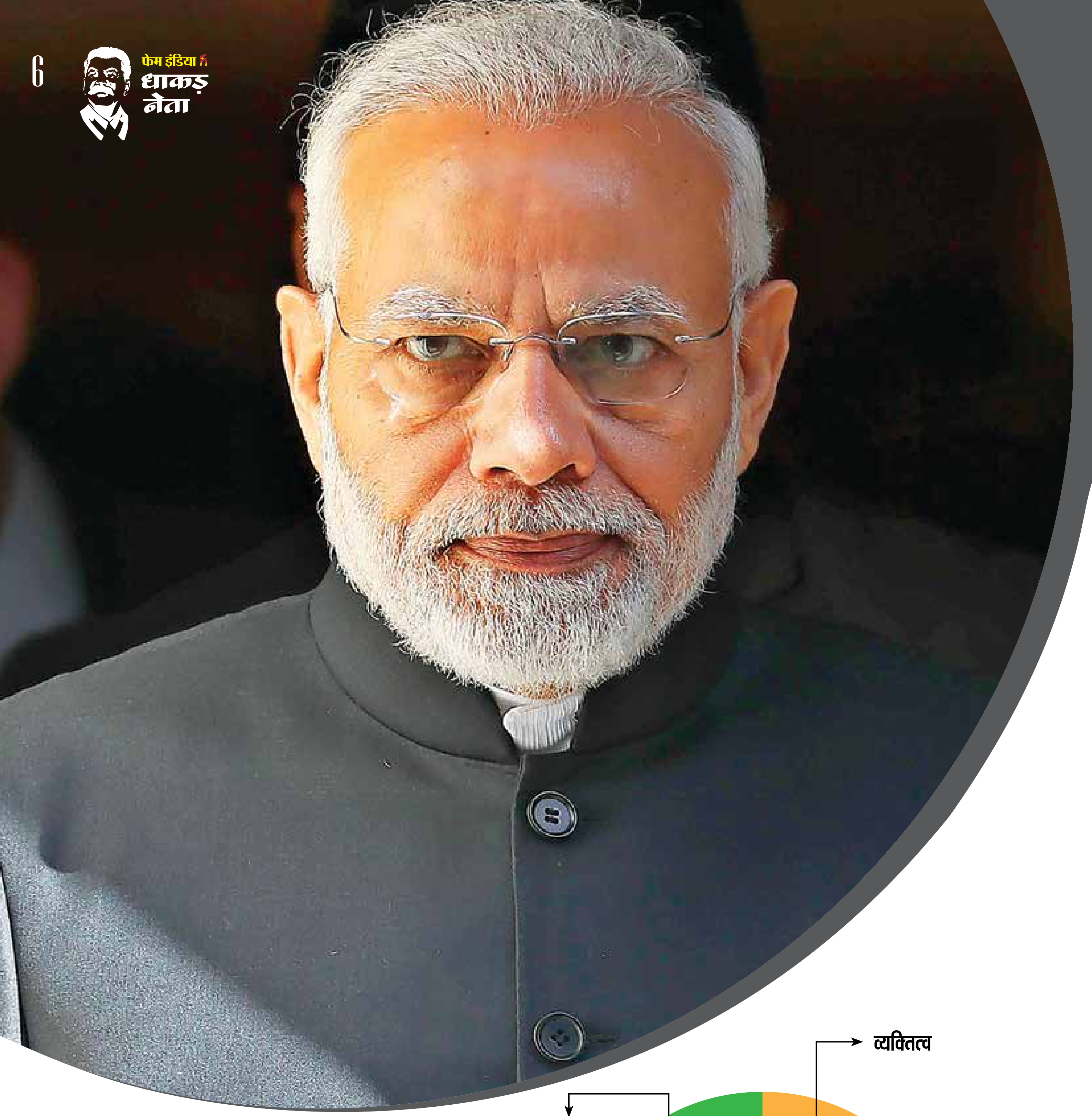

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

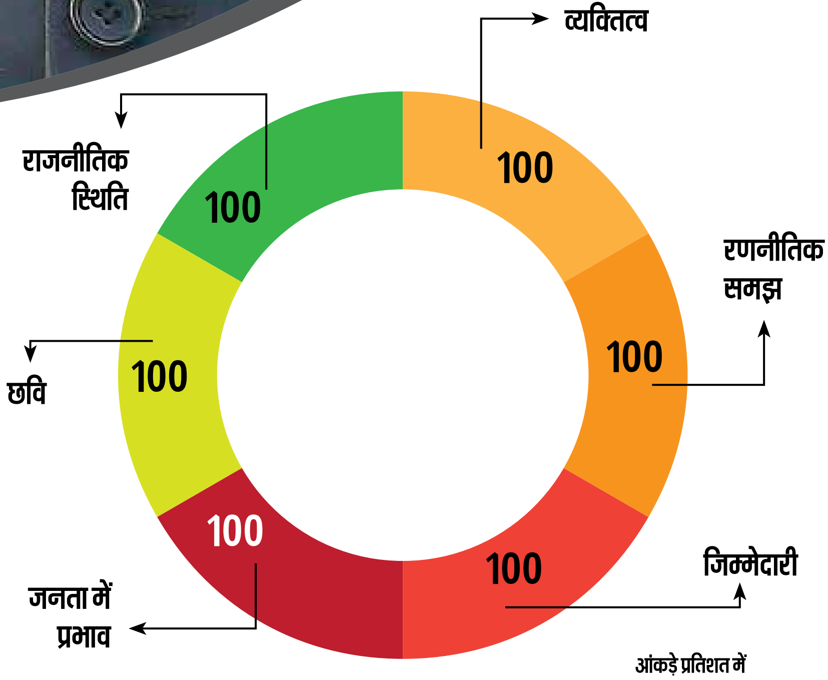

आंकड़े प्रतिशत में

सदी के ऐतिहासिक जन नायक

नरेंद्र मोदी

नमो यानी नरेंद्र मोदी, एक ऐसे धाकड़ नेता हैं जिनके नाम का डंका भारत में ही नहीं पूरे विश्व में बजता है। साल 2014 के आम चुनाव में वे अपने कार्यों, सोच और राष्ट्रवादी महत्वाकांक्षा के बल पर प्रधानमंत्री पद के सबसे मजबूत उम्मीदवार बन कर उभरे। 26 मई 2014 को जब भारत के क्षितिज पर भगवा रंग ने अपनी छटा बिखेरी और नरेंद्र मोदी की अगुवाई में बीजेपी सत्ता पर काबिज़ हुई तो इसके गवाह आठ देशों के शासन प्रमुख बने। देश में ऐसा पहली बार हुआ जब कोई गैर कांग्रेसी पार्टी पूर्ण बहुमत से सत्ता में आयी। गुजरात विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त नरेन्द्र मोदी विकास पुरुष के नाम से जाने जाते हैं। उनके कार्यों के कारण ही गुजरात की जनता ने उन्हें लगातार चार बार मुख्यमंत्री चुना था।

मोदी ने भारत को 'सॉफ्ट नेशन' की छवि से उबारा और साफ़ कर दिया कि भारत पर नज़रें टेढ़ी करना अब उतना आसान नहीं है। नरेंद्र मोदी ने अपने कार्यकाल में 90 से भी ज़्यादा विदेश यात्राएं की हैं। उन्होंने विदेशी निवेशकों को भारत में निवेश करने की सलाह दी जिसके परिणामस्वरूप भारत का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश तेजी से बढ़ा और अर्थव्यवस्था को मज़बूती मिली। इतना ही नहीं, देशी-विदेशी कंपनियों द्वारा भारत में वस्तुओं के निर्माण पर बल देने के लिए मोदी ने 'मेक इन इंडिया' की पहल की। एक तरफ जहाँ 'डिजिटल इंडिया' के ज़रिये वे देश में एक बड़ी क्रान्ति लाने में कामयाब रहे वहीं दूसरी तरफ 'स्किल इंडिया' के ज़रिये युवाओं के कौशल को निखार कर उन्हें स्वरोजगार के लिये प्रेरित किया। इसके अलावा उज्वला योजना, जन-धन योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना, उजाला योजना, आयुष्मान भारत आदि जनकल्याणकारी योजनाओं के ज़रिये मोदी जनता से जुड़े और इस बात का भी ख्याल रखा कि इन योजनाओं का लाभ सीधे जनता तक पहुंचाया जाये। 'स्वच्छ भारत' अभियान के तहत लोगों को स्वच्छता के प्रति प्रेरित करने के लिए मोदी खुद झाड़ू उठाकर सड़क पर उतर गये। देश की आम जनता से सीधे जुड़ने और उन तक अपनी बात पहुंचाने के लिए नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम की शुरुआत की।

अपने आक्रामक अंदाज़ के लिये मशहूर मोदी एक ऐसे नेता हैं जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये बड़े से बड़ा फैसला लेने में हिचकते नहीं हैं। नोटबंदी हो या जीएसटी, सर्जिकल स्ट्राइक हो या फिर एयर स्ट्राइक, मोदी ने जो ठान लिया वो करके दिखाया। मोदी की छवि एक कर्मठ, साफ़-सुथरे और राष्ट्रवादी नेता की है। उन पर आजतक भ्रष्टाचार का एक भी आरोप नहीं लगा है। वे भारत ही नहीं, दुनिया भर के सबसे लोकप्रिय नेताओं में जाने जाते हैं। विश्व प्रसिद्ध फ़ोर्ब्स पत्रिका में साल 2018 की विश्व के शक्तिशाली व्यक्तियों की सूची में मोदी का नवां स्थान था। वे देश के हर वर्ग के मतदाताओं के बीच उम्मीद की किरण बन कर उभरे हैं। उनसे भारतवासियों को काफी उम्मीदें हैं और आशा है कि वे अपनी सटीक रणनीति से उन उम्मीदों को पूरा करने में कामयाब भी होंगे।

महानायक ★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर नरेंद्र मोदी को महानायक राजनेता के तौर पर पाया है।

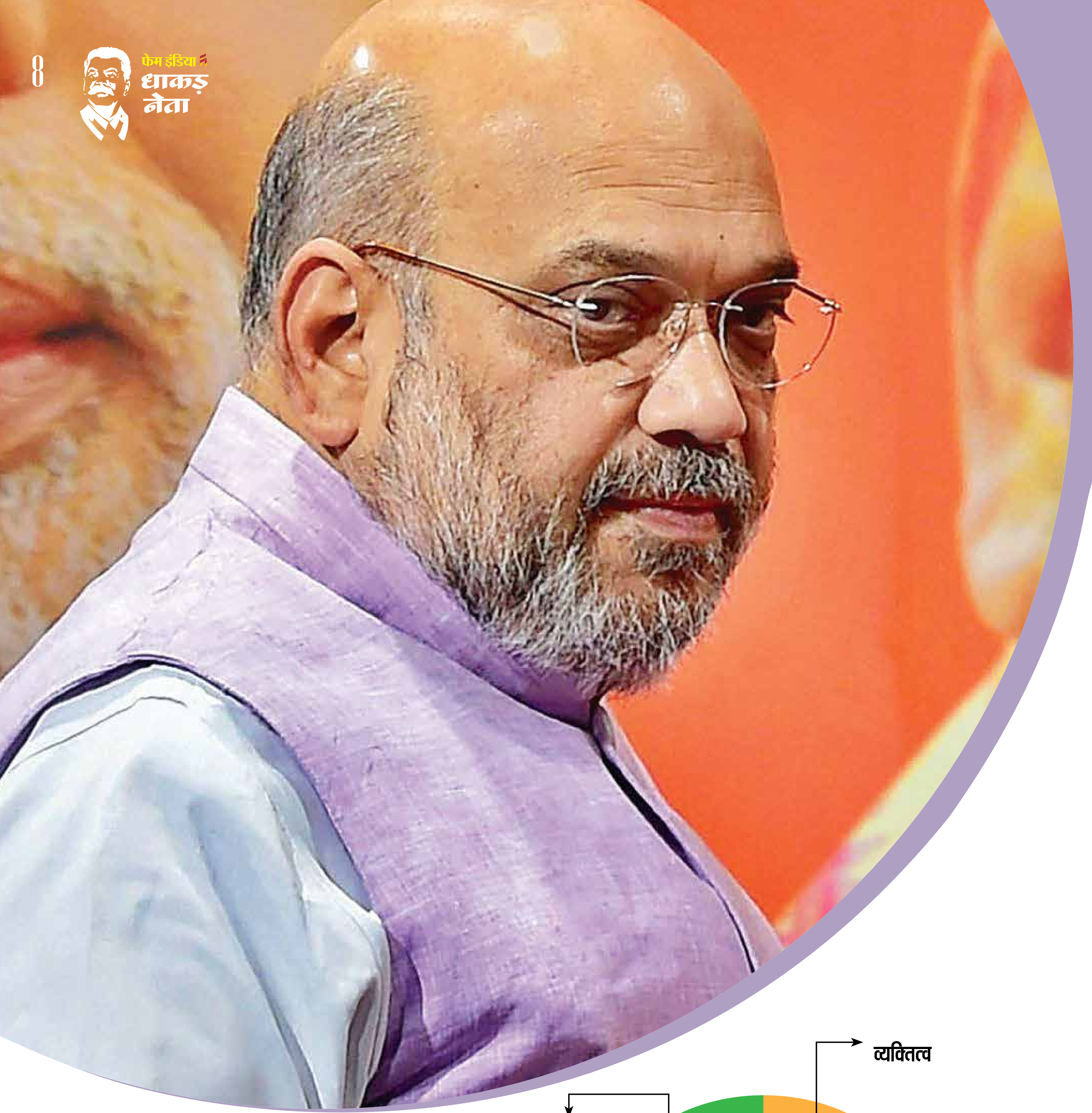

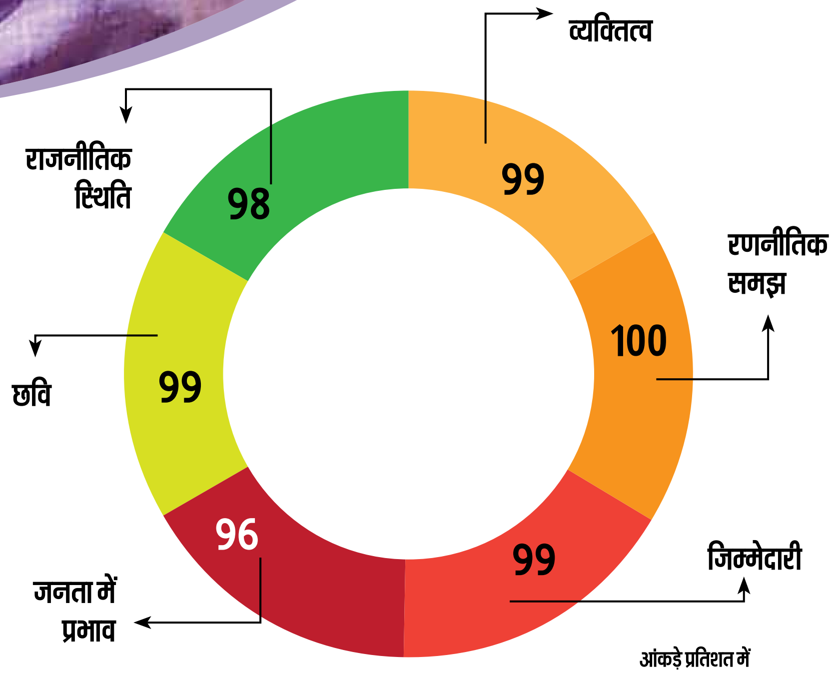

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

आधुनिक राजनीति के स्मार्ट सीईओ

अमित शाह

अपनी संगठनात्मक क्षमताओं और कुशल रणनीतिक समझ के लिए जाने जाने वाले अमित शाह उन राजनीतिज्ञों में गिने जाते हैं, जिनका राजनैतिक इतिहास प्रभावशाली है। शाह भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष हैं। इन्हें अगर बीजेपी के विजय रथ का सारथी कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनका व्यक्तित्व एक गंभीर और उसूलों के पक्के राजनेता का है। हालांकि वे राष्ट्रीय राजनीति में अन्य नेताओं के मुकाबले नये हैं, लेकिन उनमें गजब की दूरदर्शिता और नेतृत्त्व क्षमता है।

एक धनाढ्य व्यापारी परिवार में जन्मे और पले-बढ़े अमित शाह वैसे तो स्कूली जीवन से ही शिक्षा के प्रति गंभीर रहे थे, लेकिन कॉलेज में उनकी निकटता अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से बढ़ी और अहमदाबाद में नरेंद्र मोदी से मुलाकात के बाद वे पूरी तरह से छात्र राजनीति में उतर गये।

हालांकि बायोकेमिस्ट्री में बीएससी डिग्री हासिल करने के बाद कुछ दिन पिता का प्लास्टिक पाइप का कारोबार भी संभाला और स्टॉक ब्रोकिंग कंपनी भी शुरु की, लेकिन जल्दी ही वे भाजपा से पूरी तरह जुड़ गये और 1991 में लाल कृष्ण अडवाणी का व 1996 में अटल बिहारी वाजपेयी का चुनाव प्रचार संभाला और दोनों ही चुनावों में भारी मतों से जीत हासिल हुई।

पहली बार सरखेज से 1997 के विधानसभा उपचुनाव में किस्मत आजमायी और तब से 2012 तक लगातार पांच बार वहां से विधायक चुने गये। सरखज की जीत ने उन्हें गुजरात में युवा और तेजतर्रार नेता के रूप में स्थापित किया। उस जीत के बाद वे भाजपा में लगातार सीढ़ियां चढ़ते गए। मोदी के गुजरात के मुख्यमंत्री बनने के बाद शाह और अधिक मजबूती से उभरे। 2003 से 2010 तक गुजरात सरकार की कैबिनेट में उन्होंने गृह मंत्रालय का जिम्मा संभाला। हालांकि उन्हें इस बीच कई सियासी उतार-चढ़ावों का सामना करना पड़ा, लेकिन जब नरेंद्र मोदी को राष्ट्रीय राजनीतिक पटल पर लाया गया तो उनके सबसे करीबी माने जाने वाले अमित शाह को भी पूरे देश में भाजपा के प्रचार प्रसार में शामिल किया गया।

उत्तर प्रदेश में उन्होंने 80 में से 71 सीटें जितवा कर अपनी राजनीतिक क्षमता भी साबित की। उन्हें इसका पुरस्कार भी मिला और वे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाये गये। आज उनकी गिनती भाजपा के सबसे कद्दावर नेताओं में की जाती है। वे देश की राजनीति में अहम स्थान रखते हैं। उनका कार्यकर्ता से लेकर संगठन के प्रमुख तक जबरदस्त जुडाव है। वे देश के सबसे प्रभावशाली राजनेताओं में एक हैं।

प्रभावशाली

★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर अमित शाह को प्रभावशाली राजनेता के तौर पर पाया है.

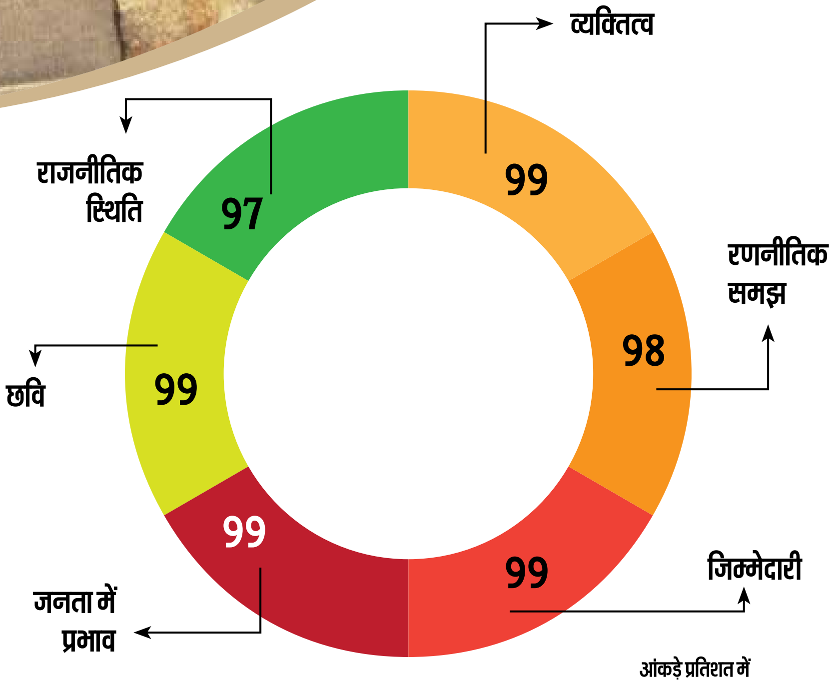

FAME INDIA

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

कुशल रणनीतिकार व विश्वस्त सहयोगी

नीतीश कुमार

बिहार में 'सुशासन बाबू' के नाम से मशहूर नीतीश कुमार राजनीति के माहिर खिलाड़ी हैं। वे एक मंझे हुए राजनेता हैं। सोशल इंजीनियरिंग के जादूगर नीतीश कुमार को छह बार बिहार के मुख्यमंत्री होने का गौरव प्राप्त है। विचारों से समाजवादी नीतीश कुमार काफी सुलझे हुए नेता माने जाते हैं।

बिहार के नालंदा जिले के कल्याण बिगहा के रहने वाले नीतीश बिहार इंजीनियरिंग कॉलेज से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। साल 1974 में जयप्रकाश नारायण के 'संपूर्ण क्रांति' के जरिए राजनीति का ककहारा सीखने वाले नीतीश बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और अपने जमाने के धाकड़ नेता सत्येंद्र नारायण सिंह के भी काफी करीबी रहे हैं। साल 1985 में नीतीश पहली बार बिहार विधानसभा के सदस्य बने और उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। साल 1987 में युवा लोकदल के अध्यक्ष बने और 1989 में जनता दल के सचिव बनाए गए। साल 1989 में पहली बार नीतीश बाढ़ संसदीय क्षेत्र से सांसद बने। वे दो बार रेलमंत्री भी रह चुके हैं।

साल 2000 में नीतीश पहली बार बिहार के मुख्यमंत्री रहे लेकिन महज 7 दिनों के लिए। साल 2005 में नीतीश की पार्टी जेडीयू ने बीजेपी के साथ मिलकर 15 साल पुरानी लालू-राबड़ी सरकार को उखाड़ फेंका और नीतीश बिहार के मुख्यमंत्री बने। 'न्याय के साथ विकास' मूलमंत्र के साथ सत्ता में आये नीतीश के कार्यकाल में बिहार की सड़कें सुधर गईं, बिजली की आपूर्ति पहले से ज्यादा होने लगी, पटना में कई पुल और फ्लाईओवर बने और बिहार में विकास दिखने लगा। साल 2010 में प्रदेश की जनता ने फिर प्रदेश की कमान सुशासन बाबू को सौंप दी लेकिन कार्यकाल के पूरा होने के पहले ही 2014 के लोकसभा चुनाव में हुई करारी हार का जिम्मा लेते हुए उन्होंने इस्तीफा दे दिया। 22 फरवरी 2015 को उन्होंने एक बार फिर बिहार की कमान संभाली और महागठबंधन की सरकार बनाई। इनकी पार्टी ने लालू की पार्टी से अपना गठबंधन तोड़कर बीजेपी पार्टी से हाथ मिला लिया और फिर से राज्य के मुख्यमंत्री बने। साल 2017 में नीतीश कुमार छठी बार सत्ता पर काबिज़ हुए।

मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने 1 लाख स्कूली शिक्षकों की भर्ती की ताकि इनके राज्य में पढ़ाई का स्तर बेहतर हो सके और लोगों को रोजगार भी मिल सके। सामाजिक सुधार के लिए शराबबंदी जैसे कठिन फैसले लेने वाले नीतीश कुमार ने स्वास्थ्य और लड़कियों की शिक्षा के लिए भी कई अहम कार्य किए हैं। 2019 के आम चुनाव में बिहार में नीतीश कुमार एनडीए का चेहरा थे और दोबारा एनडीए को सत्ता में लाने के लिए संकल्पित दिखे।

उत्कृष्ट

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर नीतीश कुमार को उत्कृष्ट राजनेता के तौर पर पाया है।

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

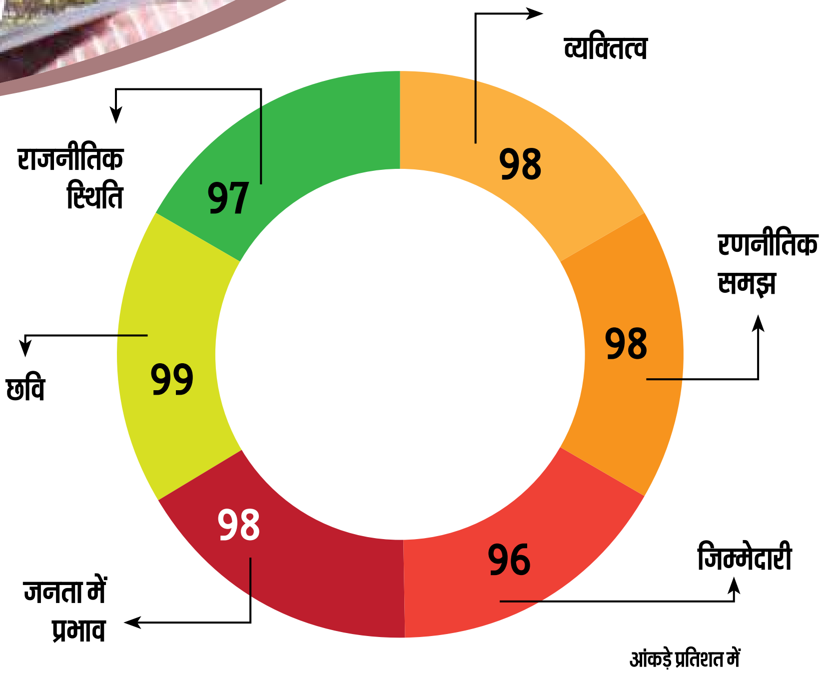

मजबूत विरासत को सहेजने में माहिर

उद्धव ठाकरे

महाराष्ट्र में मराठी और हिंदू वोटों को एक साथ मिलाकर आगे बढ़ने की जादुई कला में माहिर शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने साबित कर दिया है कि वे अपने पिता बाला साहेब की विरासत के सच्चे हकदार हैं। 27 जुलाई1960 को जन्मे उद्धव ने सक्रिय राजनीति में आने से पहले पार्टी के मुखपत्र मराठी दैनिक 'सामना' का कामकाज भी संभाला है। हालांकि तब भी वे पार्टी की चुनाव संबंधी गतिविधियों में भाग लेते थे। वर्ष 2002 में बृहन्मुंबई म्युनिसिपल कॉरपोरेशन के चुनावों में पार्टी को सफलता मिली तो उन्हें जनवरी 2003 से पार्टी का कार्यकारी अध्यक्ष बना दिया गया।

उद्धव ठाकरे को शिवसेना के ट्रांस्फॉर्मेशन का अगुआ माना जाता है क्योंकि उनके नेतृत्व में ही पार्टी ने मुंबईकर और मराठियों के सीमित स्वार्थ से ऊपर उठ कर राष्ट्रवाद और हिंदुत्व के एजेंडे को आत्मसात किया। उन्हें इसका फायदा भी मिला और पार्टी महाराष्ट्र ही नहीं, पूरे देश में मान्य होने लगी। पिछले दिनों जब उन्होंने अयोध्या में राम मंदिर की स्थापना के लिये आंदोलन शुरू किया तो विश्लेषकों ने यहां तक कहा कि भाजपा और विश्व हिंदू परिषद भी इस मुद्दे पर इतना जन समर्थन नहीं जुटा पाती जितना शिवसेना को मिल गया। शायद यही वजह रही कि वर्ष 2018 में बृहन्मुंबई म्युनिसिपल चुनाव अलग-अगल लड़ने के बावजूद भाजपा ने लोकसभा चुनाव में उसे अपने सबसे बड़े साझीदार के रूप में अपनाया।

उद्धव की छवि एक उत्साही, दूरदर्शी और सख्त फैसले लेने वाले राजनेता की है। समय आने पर वे अपने साझीदारों की भी तीखी आलोचना करने से नहीं चूकते। कई बार उन्होंने अपनी पार्टी के नेताओं की भी सार्वजनिक मंच पर आलोचना और उनके खिलाफ कार्रवाई तक की है। यही कारण है कि उनके पास भारी जन-समर्थन रहा है और पार्टी के नेता अनुशासन तोड़ने की हिम्मत नहीं करते हैं। हालांकि उनके नेतृत्त्व में शिवसेना ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, लेकिन समय के साथ-साथ उद्धव ठाकरे ने जनसाधारण को अपने साथ जोड़ लिया है। भारतीय जनता पार्टी के साथ उद्धव ठाकरे और उनकी पार्टी पच्चीस वर्षों से भी अधिक समय से साझीदार है, और यही दोनों की मजबूती का आधार भी है। वर्ष 2018 में म्युनिसिपल चुनावों में उन्होंने भाजपा से अलग चुनाव लड़ कर अपनी शक्ति का अहसास भी करा दिया था, लेकिन यह भी जान लिया कि मिल कर लड़ने से वे बड़े से बड़ा चट्टान तोड़ सकते हैं।

उद्धव ठाकरे एक सुलझे हुए राजनेता ही नहीं, एक क्रियेटिव इंसान भी हैं। अपने राजनीतिक करीयर की शुरुआत से पहले वे कला और पर्यावरण में रुचि रखते थे और अभी भी वन्य जीवों के चित्रों को देखकर उनकी प्रतिभा का अंदाजा लगाया जा सकता है। वे बहुत उम्दा फोटॉग्राफर हैं। हालांकि वे शौकिया फोटॉग्राफी करते हैं लेकिन इससे जुड़ी प्रदर्शिनयों और पर्यावरण से जुड़े कार्यक्रमों का नियमित तौर पर आयोजन करते हैं। उनकी कई फोटो बुक्स प्रकाशित हो चुकी हैं जो कि राज्य के लोगों, जनजीवन और विरासत से जुड़ी बातों पर प्रकाश डालती हैं।

असरदार

★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर उद्धव ठाकरे को असरदार राजनेता के तौर पर पाया है।

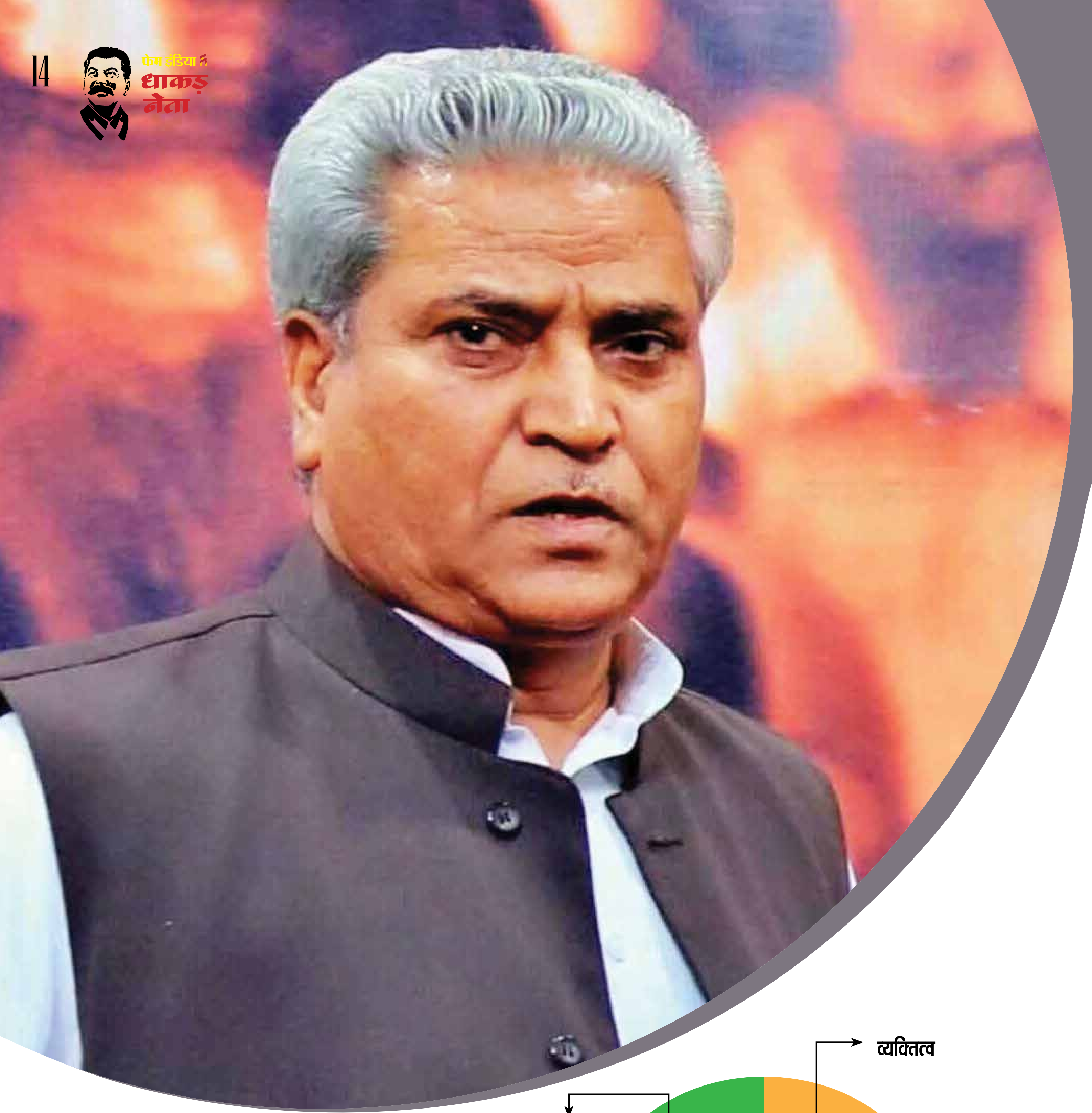

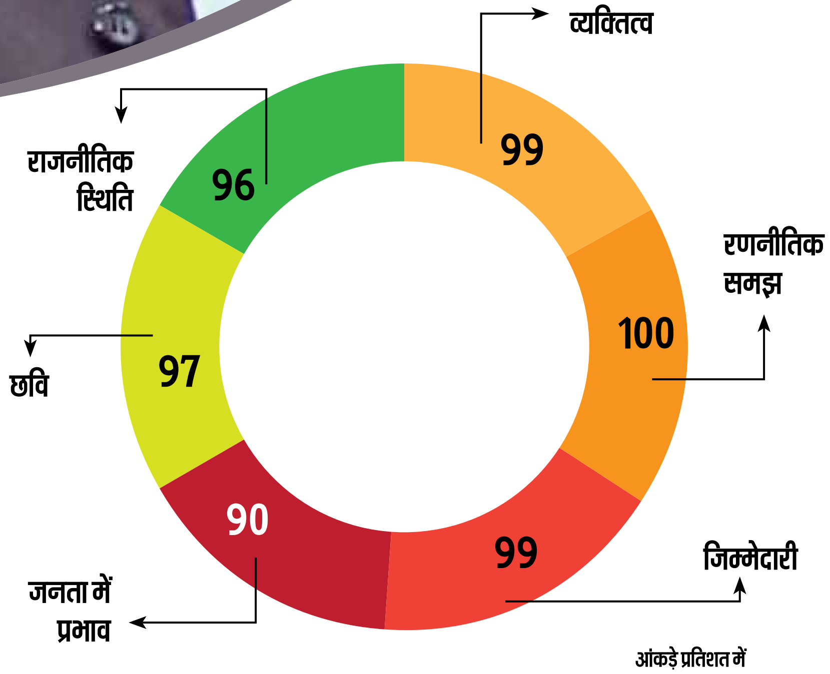

आंकड़े प्रतिशत में

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

संघ और भाजपा के समन्वय सेतु

राम लाल

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) दोनों ही संगठनों के प्रमुख स्तंभ माने जाने वाले रामलाल का व्यक्तित्व बेहद धीर-गंभीर और स्थायित्व भरा है. वे भाजपा में सबसे लंबे समय तक रहने वाले संगठन मंत्री हैं. वे अपनी बेहतरीन संगठन क्षमता के लिए जाने जाते हैं. उनका मुख्य कार्य आरएसएस की विचारधारा को फैलाना, दोनों संगठनों के बीच समन्वय बनाये रखना और कैडर का ध्यान रखना है.

वैसे तो रामलाल मथुरा के मूल निवासी हैं, लेकिन अब पूरा देश उन्हें अपने घर के समान लगता है. पार्टी के देश भर में चलने वाले अभियानों, शिविरों और कार्यक्रमों को दिशा देने में उनकी भूमिका अहम रहती है. उन्हें जमीन पर पकड़ रखने वाला नेता माना जाता है.

अपनी कुशल प्रबंधन क्षमता और दूरदर्शिता के कारण बड़े से बड़े आयोजन को भी आसानी से निपटा देने वाले रामलाल एक बेहद साधारण व्यापारी परिवार से आते हैं. हालांकि वे बचपन से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबद्ध रहे थे, लेकिन सन 1974 में एक पूर्णकालिक प्रचारक के तौर पर कार्य प्रारंभ किया. सन 1998 में वे ब्रज के प्रांत प्रचारक बनाये गये. सन 2000 में उन्हें ब्रज, मेरठ और उत्तराखंड का क्षेत्र प्रचारक बनाया गया.

जुलाई 2006 में वे भारतीय जनता पार्टी से जुड़ गये और राष्ट्रीय संगठन मंत्री बनाये गये. कहा जाता है इस पद का गठन ही संघ ने भाजपा नेताओं की निगरानी करने के लिये किया है. संजय जोशी के पद से हटने के बाद आरएसएस ने रामलाल को इस पद पर नियुक्त किया था. इस पद का महत्व इसी बात से समझा जा सकता है कि जब लाल कृष्ण आडवाणी ने जिन्ना पर वर्ष 2004 में बयान दिया था तो आरएसएस ने उन्हें पद से हटाने का दवाब बनाया. उस वक्त भाजपा में उनके इस्तीफे का प्रस्ताव करने के लिए कोई सामने नहीं आया, तब संजय जोशी ने प्रस्ताव पेश किया. इसके बाद ही आडवाणी को अपने पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा.

रामलाल को लगातार कई चुनावों में महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियां दी गयीं जिनका निर्वहन बेहद सफलता पूर्वक कर उन्होंने अपनी क्षमता साबित की. हर चुनाव में उन्होंने खुद स्वयंसेवकों और कार्यकर्ताओं के बीच जाकर उन्हें पार्टी के पक्ष में काम करने के लिये प्रेरित किया.

रामलाल को चुनावों के विशेषज्ञ के तौर पर माना जाता है और भाजपा का बड़े से बड़ा नेता भी उनसे सलाह लेकर ही अपनी रणनीति तय करता है. उनकी छवि एक सुलझे हुए राजनेता की है और उन्हें बेहद कर्मठ माना जाता है.

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, पार्टी में प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर किये गये देशव्यापी सर्वे में रामलाल को धाकड़ नेताओं में अहम स्थान प्राप्त हुआ है.

अनुभवी
★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर रामलाल को अनुभवी राजनेता के तौर पर पाया है।

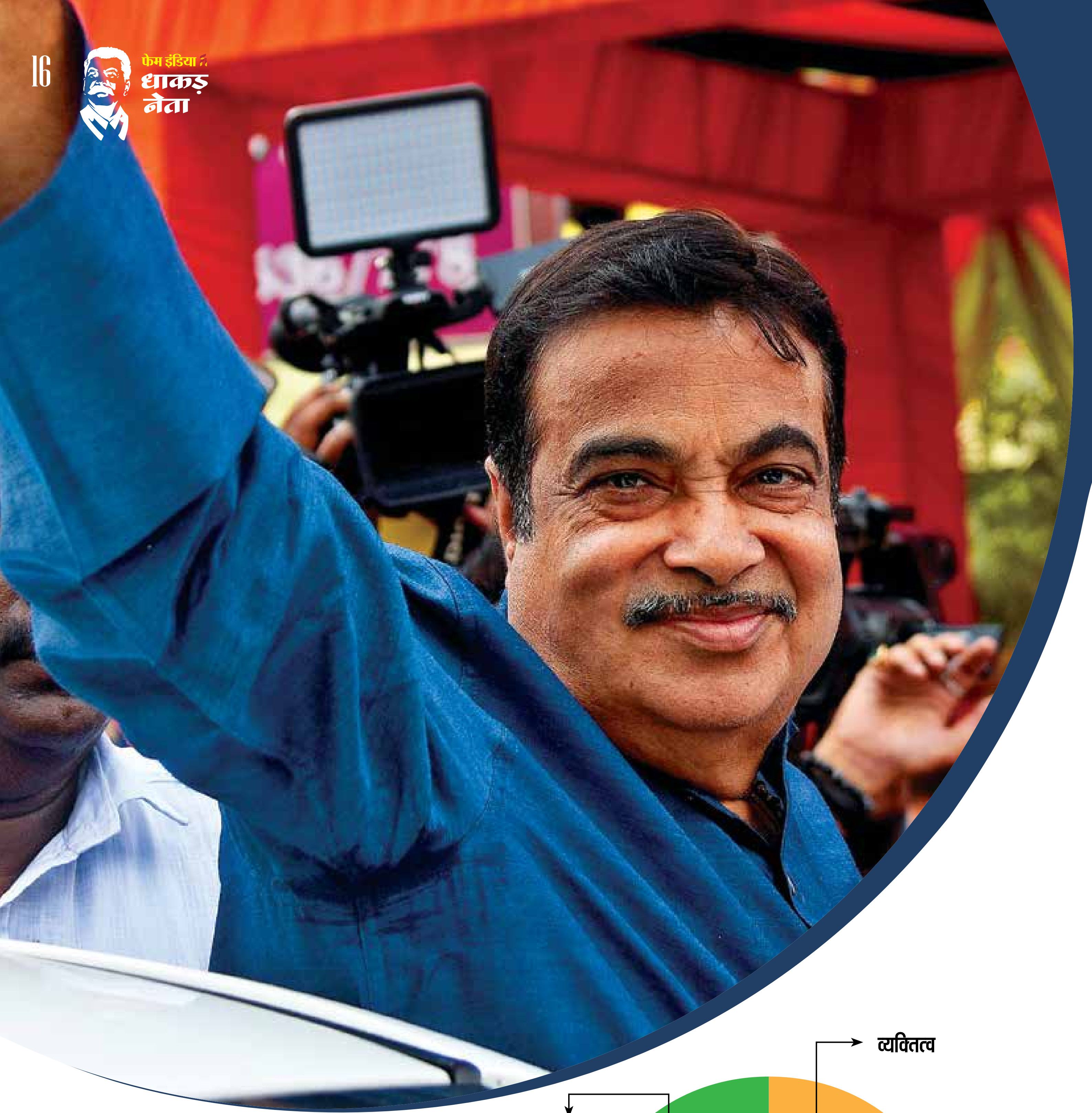

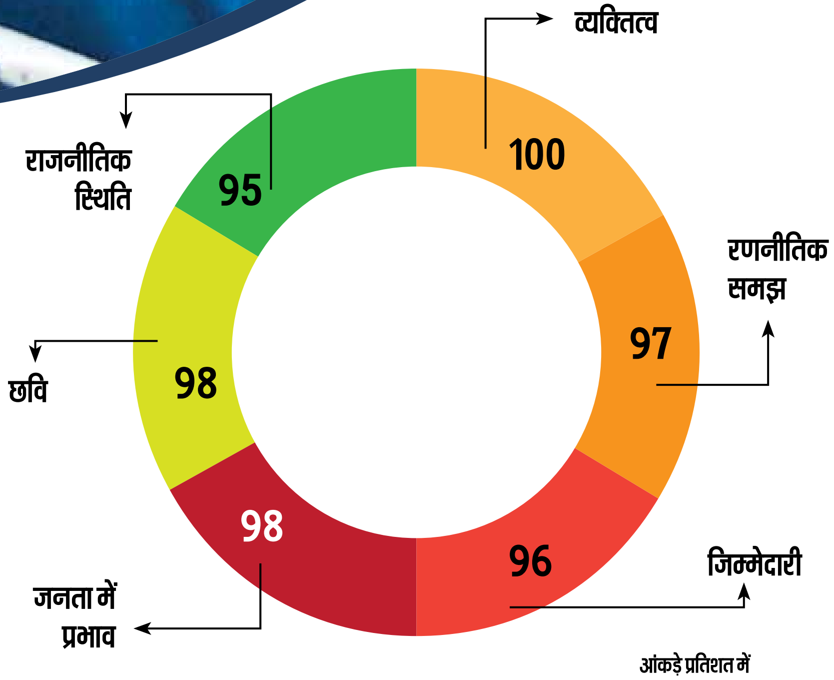

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

विकास के पथ पर सदैव अग्रसर

नितिन गडकरी

ऐसे कम ही नेता हुए हैं जिनके बारे में पक्ष और विपक्ष दोनों की राय एक सी रही हो, नितिन गडकरी ऐसे ही नेताओं में से एक हैं। वे एक ऐसे कुशल और मंझे हुए नेता हैं, जो किसी भी लक्ष्य को पाने की कसौटी पर निरंतर खरे उतरते रहे हैं। वर्तमान में गडकरी सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री, जहाज़रानी विभाग के केंद्रीय कैबिनेट मंत्री हैं। अपने कार्यकाल में शानदार प्रदर्शन से उन्होंने ना केवल जनता का भरोसा जीता है बल्कि एक ऐसे मुकाम पर पहुंचे हैं जहाँ तक पहुँचने का सपना हर नेता देखता है।

स्वभाव से सौम्य, सरल, मृदुभाषी नितिन गडकरी का जन्म 27 मई 1957 को महाराष्ट्र के नागपुर जिले में हुआ। वे कॉमर्स में स्नातकोत्तर हैं। इसके अलावा उन्होंने कानून तथा बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई भी की है। बेहद लोकप्रिय और ऊर्जावान गडकरी आरएसएस के चहेते माने जाते हैं। उन्होंने 1976 में नागपुर विश्वविद्यालय में भाजपा की छात्र शाखा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की। बाद में वे 23 साल की उम्र में भारतीय जनता युवा मोर्चा के अध्यक्ष बने। 1995 में वो महाराष्ट्र में शिव सेना- भारतीय जनता पार्टी की गठबंधन सरकार में लोक निर्माण मंत्री बनाए गए। मंत्री के रूप में अपने अच्छे कामों की वजह से उन्होंने ज़बर्दस्त तारीफ़ भी बटोरी। वे महाराष्ट्र विधान परिषद में विपक्ष के नेता भी रहे हैं। अपने राजनीतिक करियर में हासिल उपलब्धियों की बदौलत ही साल 2001 में 52 वर्ष की आयु में वे पार्टी के सबसे कम उम्र के अध्यक्ष बने। उनका कार्यकाल इतना प्रभावशाली रहा कि भाजपा ने उन्हें लगातार दूसरी बार अध्यक्ष बनाने के लिए अपनी पार्टी के संविधान में संशोधन भी किया। 2009 में दूसरी बार भाजपा का अध्यक्ष के तौर पर पार्टी की कमान संभालने के बाद उन्होंने जिस तरह पुनर्गठन और नीतियों में बदलाव किया, उसने इस राजनीतिक दल में कामकाज करने के तरीकों का कायाकल्प कर दिया। 2014 में भाजपा को मिले प्रचंड बहुमत के लिये इस संगठनात्मक बदलाव को एक बड़ी वजह माना जाता है। नितिन गडकरी ने 2014 में पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ा और नागपुर सीट पर बड़े अंतर से जीत हासिल की। केंद्र में भाजपा की सरकार के गठन के साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल किया। हालांकि वे पहली बार केंद्र सरकार में शामिल हुए, लेकिन उनकी क़ाबलियत, कार्यकुशलता और प्रबंधन क्षमता को देखते हुए उन्हें सबसे महत्वपूर्ण मंत्रालयों में से एक और केंद्र सरकार की अत्यंत महत्वाकांक्षी योजना वाले सड़क परिवहन विभाग का कार्यभार सौंपा गया।

नितिन गडकरी एक काबिल राजनीतिज्ञ व प्रशासक ही नहीं बल्कि एक सफल किसान और उद्योगपति भी हैं। कृषि क्षेत्र में नये औजारों और तकनीक का इस्तेमाल तथा बेहतर जल प्रबंधन जैसी बातों पर ख़ास ध्यान केंद्रित करके उन्होंने विदर्भ जैसे पिछड़े क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक उत्थान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में उनकी भूमिका और योगदान अपने आप में एक मिसाल है।

लोकप्रिय ★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर नीतिन गडकरी को लोकप्रिय राजनेता के तौर पर पाया है।

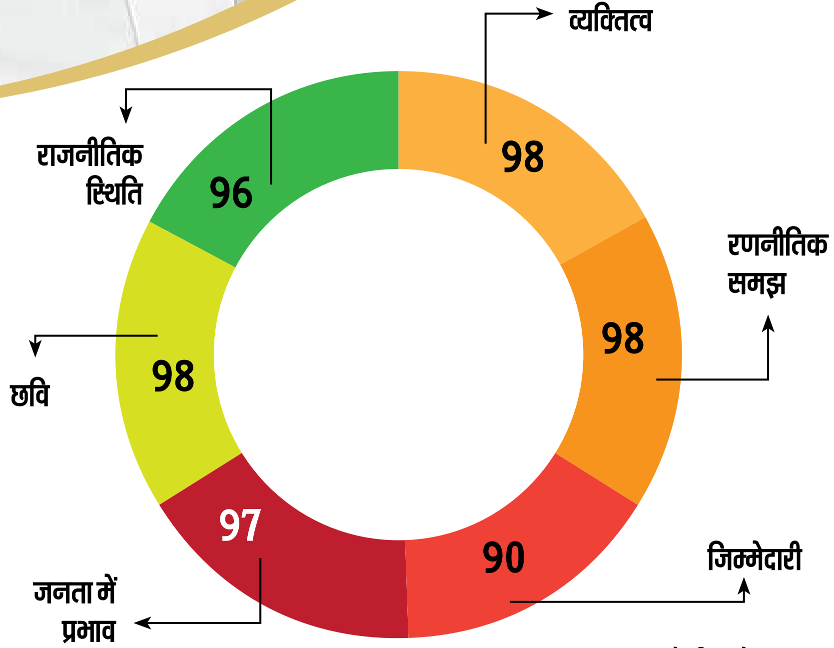

आंकड़े प्रतिशत में

FAME INDIA

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

ऐतिहासिक गौरव को संघर्षों से दिया पुनर्जीवन

जगन मोहन रेड्डी

सियासत की कठिन डगर पर अपना रास्ता खुद चुनने वाले येदुगूरी संदिंटि जगन मोहन रेड्डी आंध्र प्रदेश के सियासी पटल पर एक मजबूत चेहरा बनकर उभरे हैं। वे ना केवल क्षेत्रीय राजनीति में बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाने में सफल रहे हैं। जगन मोहन वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के संस्थापक हैं और वर्तमान में बडी भूमिका निभा रहे हैं।

आंध्र प्रदेश कांग्रेस के कद्दावर नेता और पूर्व मुख्यमंत्री वाई एस राजशेखर रेड्डी के बेटे वाई एस जगन मोहन रेड्डी का जन्म 21 दिसंबर 1972 में आंध्र प्रदेश के कड़प्पा जिले के पुलिवेंदुला गाँव में हुआ था। सीमेंट और पॉवर कंपनियों के मालिक जगन ने साल 2004 में राजनीति में आने का मन बनाया। उन्होंने कड़प्पा सीट के लिए कांग्रेस का प्रचार किया और साल 2009 में इसी सीट से लोकसभा पहुंचे।

पिता के आकस्मिक दुःखद निधन के बाद उनका दायित्व संभालने वाले वाईएसआरसीपी नेता ने खुद को एक नेता के तौर पर बार-बार साबित किया है। उन्होंने कांग्रेस आलाकमान और आंध्र प्रदेश के कांग्रेस नेताओं के सामने घुटने टेके बिना अपना राजनीतिक सफर शुरू करने का निर्णय लिया और अपनी पार्टी की नींव डाली। इसके बाद उनको कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा लेकिन इस युवा नेता ने दृढ़ संकल्प के साथ अपने दम पर हर चुनौती का सामना किया और एक शक्तिशाली राजनीतिक ताकत के रूप में उभरे। ओदार्पु यात्रा से राज्य के लोगों के दिलों में उन्होंने अपनी एक अलग जगह बनाई।

राज्य के लोग जगन में उनके पिता का प्रतिबिंब देखते हैं। लोगों में यह भी धारणा और भरोसा है कि जगन भी उनके पिता की भांति जो कहते हैं उसे पूरा करने में विश्वास रखते हैं। वर्ष 2014 के लोकसभा और विधानसभा चुनावों में टीडीपी-भाजपा गठबंधन भी इस उभरते युवा नेता की चुनौतियों के सामने फीका पड़ता दिखाई दिया था। कभी आंध्र की मजबूत पार्टी रही कांग्रेस की तो जड़ें ही इस युवा नेता ने उखाड़ फेंकीं। वर्तमान राज्य में कांग्रेस का एक सांसद तो दूर विधायक भी नहीं है। जगनमोहन रेड्डी ने नेता विपक्ष के तौर पर राजधानी अमरावती हो या पोलवरम परियोजना या फिर रेत माफिया सभी मामलों में टीडीपी और उसके नेताओं को बेनकाब करते हुए सरकार के कई घोटालों का पर्दाफाश किया है।

ज़मीन से जुड़े वाईएस जगनमोहन रेड्डी ने प्रजा संकल्प यात्रा के ज़रिये लोगों की प्राथमिक और बुनियादी समस्याएं जानने का प्रयास किया और वे लोगों को सत्ता में आने पर उनकी हर परेशानी दूर करने का भरोसा देते हुए आगे बढ़ रहे हैं। मजबूत इरादों और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले इस नेता ने आंध्र प्रदेश में सभी पार्टियों को चुनौती देते हुए खुद को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया।

बेजोड़

★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर जगन मोहन रेड्डी को बेजोड़ राजनेता के तौर पर पाया है।

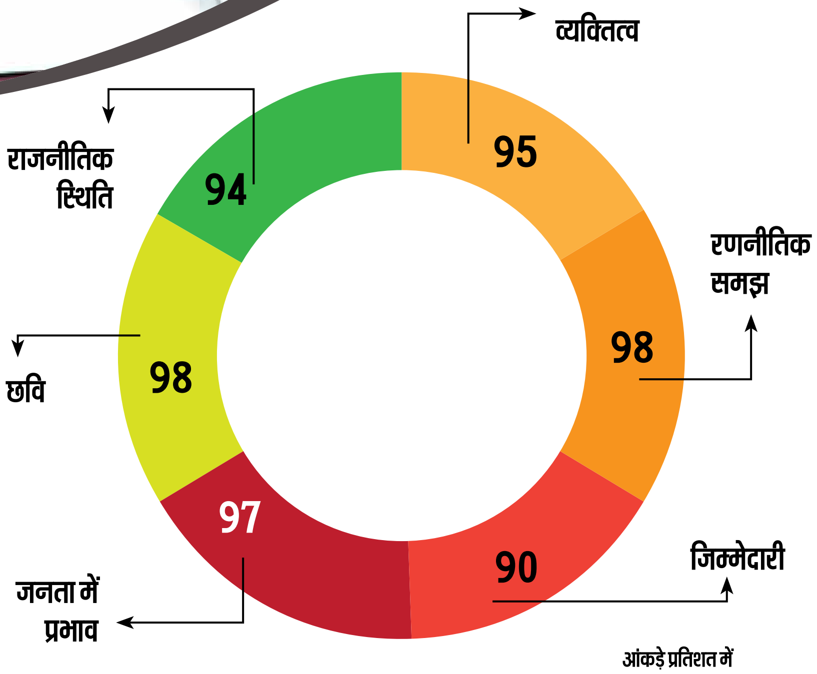

आंकड़े प्रतिशत में

FAME INDIA

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

शक्तिशाली क्षेत्रीय क्षत्रप

स्टालिन

राजनीति भले ही इनको विरासत में मिली हो लेकिन राजनीति का सफ़र इनके लिए कतई आसान नहीं रहा है। सियासत के सफ़र में ये आज जिस बुलंदी पर पहुंचे हैं वो इनकी योग्यता, कड़ी मेहनत और धैर्य का ही परिणाम है। जैसे आग में तपकर सोना कुंदन बन जाता है वैसे ही जीवन की चुनौतियों ने इनके व्यक्तित्व को और निखार दिया। हम बात कर रहे हैं द्रविड़ मुनेत्र कझगम (डीएमके) प्रमुख एमके स्टालिन की। स्टालिन तमिलनाडु के पांच बार मुख्यमंत्री रह चुके तमिलनाडु के मशहूर राजनेता करुणानिधि के बेटे हैं। फिलहाल वो तमिलनाडु विधानसभा में विपक्ष के नेता की भूमिका निभा रहे हैं।

1 मार्च 1953 को जन्मे स्टालिन का नाम इनके पिता ने सोवियत कम्युनिष्ट जोसेफ स्टालिन के नाम पर रखा था। स्टालिन ने चेन्नई में मद्रास विश्वविद्यालय के नंदनम आर्ट्स कॉलेज से इतिहास में अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी की है। तेज-तर्रार नेता माने जाने वाले स्टालिन का झुकाव अपने स्कूली दिनों से ही राजनीति की ओर था। 14 साल की उम्र में ही उन्होंने अपने पिता के लिए प्रचार करना शुरू कर दिया था। स्टालिन ने राजनीति में क़दम रखा ही था कि साल 1975 में आपातकाल के दौरान उनकी गिरफ्तारी और जेल में अत्याचार की ख़बरों ने पार्टी के बीच उनका सम्मान बढ़ा दिया था। इसके बाद स्टालिन बहुत तेज़ी से पार्टी में आगे बढ़ते गए। स्टालिन तमिलनाडु विधानसभा के लिए चेन्नई के थाउजेंड लाइट्स निर्वाचन क्षेत्र से चार बार चुने गए हैं। 1996 में उन्हें चेन्नई के पहले सीधे तौर पर निर्वाचित मेयर के रूप में चुना गया। इस कार्यकाल में उन्होंने अपनी प्रशासनिक क्षमता का शानदार प्रदर्शन किया। धीरे-धीरे पिता की छाया से बाहर निकल कर इन्होंने खुद को स्थापित किया। इन्होंने चेन्नई के गोपालपुरम में पार्टी की यूथ विंग की शुरुआत की थी। वर्ष 2006 तक स्टालिन का कद और अधिक बढ़ गया। ये चौथी बार विधायक बने और इन्हें पिता के मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में जगह मिली। 2009 में ये उपमुख्यमंत्री बने। साथ पार्टी के उप महासचिव और कोषाध्यक्ष भी रहे। स्टालिन साल 2014 के आम चुनावों और 2016 के विधानसभा चुनावों में पार्टी के प्रमुख रणनीतिकार भी रहे थे। उन्होंने उम्मीदवारों के चयन और अन्य दलों से गठबंधन को लेकर फ़ैसले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

स्टालिन ने 80 के दशक में कुछ तमिल फिल्मों और टीवी धारावाहिकों में भी काम किया है। करूणानिधि की मृत्यु के बाद अब डीएमके की बागडोर इन्हीं के हाथों में आ गयी है। 2019 का लोकसभा चुनाव इनके लिए सबसे बड़ा इम्तिहान साबित हुआ। ये इस इम्तिहान को पास कर एक बेहद सफल रणनीतिकार के तौर पर उभरे हैं, साथ ही दक्षिण की राजनीति के सबसे मजबूत क्षत्रप के तौर पर अपनी छवि स्थापित कर ली है।

चर्चित

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर स्टालिन को चर्चित राजनेता के तौर पर पाया है।

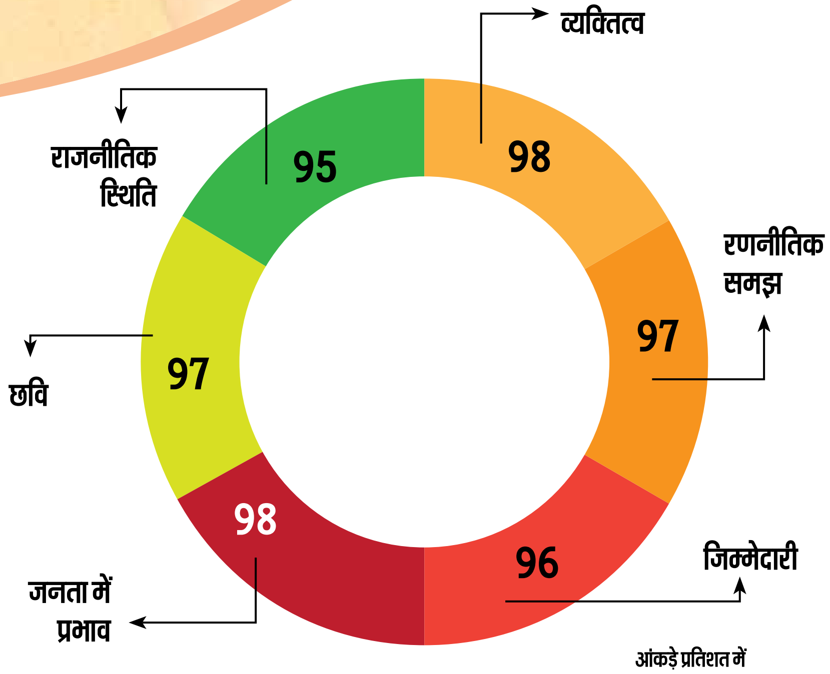

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

विशालतम प्रदेश के वैरागी राजर्षि

योगी आदित्यनाथ

कट्टर हिंदू वादी छवि वाले योगी आदित्यनाथ को पूरे देश में फायर ब्रांड नेता माना जाता है। अनेक ऐसे मौके आए जब उनके बेबाक बोल ने हिंदू जनमानस को उद्वेलित किया। उन्होंने तमाम हिंदू संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाई है। हिंदों को एक मंच के नीचे लाने के लिए उन्होंने हिंदू युवा वाहिनी का गठन किया। तकरीबन एक दशक से अधिक वक्त से भारतीय जनता पार्टी से जुड़े योगी आदित्यनाथ वर्तमान में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं।

योगी आदित्यनाथ ने अपनी राजनीतिक पारी की शुरुआत 1998 से की। गढ़वाल यूनिवर्सिटी से बीएससी की पढ़ाई करने वाले योगी को गोरखनाथ मंदिर के महंत अवैद्यनाथ ने दीक्षा देकर योगी बनाया था। अवैद्यनाथ ने 1998 में राजनीति से संन्यास लिया और योगी आदित्यनाथ को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। यहीं से योगी आदित्यनाथ की राजनीतिक पारी की शुरुआत हुई। 1998 में गोरखपुर से 12वीं लोकसभा का चुनाव जीतकर योगी आदित्यनाथ संसद पहुंचे तो वह सबसे कम उम्र के सांसद थे। तब उन्होंने बहुत ही कम अंतर से जीत दर्ज की थी, लेकिन उसके बाद हर चुनाव में उनका जीत का अंतर बढ़ता गया और वे 1999, 2004, 2009 तथा 2014 में सांसद चुने गए। पूर्वांचल पर मजबूत पकड़ रखने वाले योगी अब तक यूपी बीजेपी का बड़ा चेहरा माने जाने लगे।

अपने बयानों को लेकर सुर्खियों का हिस्सा बनने वाले योगी का कद धीरे-धीरे इतना बढ़ने लगा कि वो जहां खड़े होते, सभा शुरू हो जाती, वो जो बोल देते, उनके समर्थकों के लिए वो कानून हो जाता। पार्टी में भी उनकी धाक जमने लगी। लोकसभा चुनाव के दौरान अपने उम्मीदवार न उतारे जाने से नाराज़ योगी ने बीजेपी के खिलाफ जब तल्ख रुख अख्तियार किया तो पूर्वांचल में अपनी ज़मीन एक बार फिर से तलाशने में जुटी बीजेपी को योगी से समझौता करना पड़ा। 2017 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में योगी स्टार प्रचारक थे और इस चुनाव में बीजेपी की प्रचंड जीत के साथ ही वो सीएम की कुर्सी पर आसीन हुए। मुख्यमंत्री बनते ही योगी ने केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का राज्य में उचित ढंग से क्रियान्वयन पर बल दिया। हिन्दू संस्कृति को बचाए-बनाये रखने के लिए हिन्दू त्योहारों को बड़े स्तर पर मनाये जाने के आदेश दिए, गौ-तस्करी पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया। उनके कार्यकाल के दौरान 2019 में प्रयागराज में आयोजित कुम्भ मेला इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हो चुका है।

आदित्यनाथ अयोध्या में विवादित स्थल पर राम मंदिर निर्माण के मजबूत पैरोकार हैं। इनकी छवि कथित रूप से एक देशभक्त की है। इनकी ख़ासियत है कि ये जनता से सीधा संवाद स्थापित करते हैं। ट्विटर इंडिया ने वर्ष 2018 की सबसे चर्चित 10 हस्तियों की जो सूची जारी की थी। इसमें पांच राजनीतिज्ञ हैं और उनमें नरेंद्र मोदी, राहुल गांधी और अमित शाह के बाद योगी आदित्यनाथ चौथे नंबर पर थे।

कर्मयोद्धा ★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर योगी आदित्यनाथ को कर्मयोद्धा राजनेता के तौर पर पाया है।

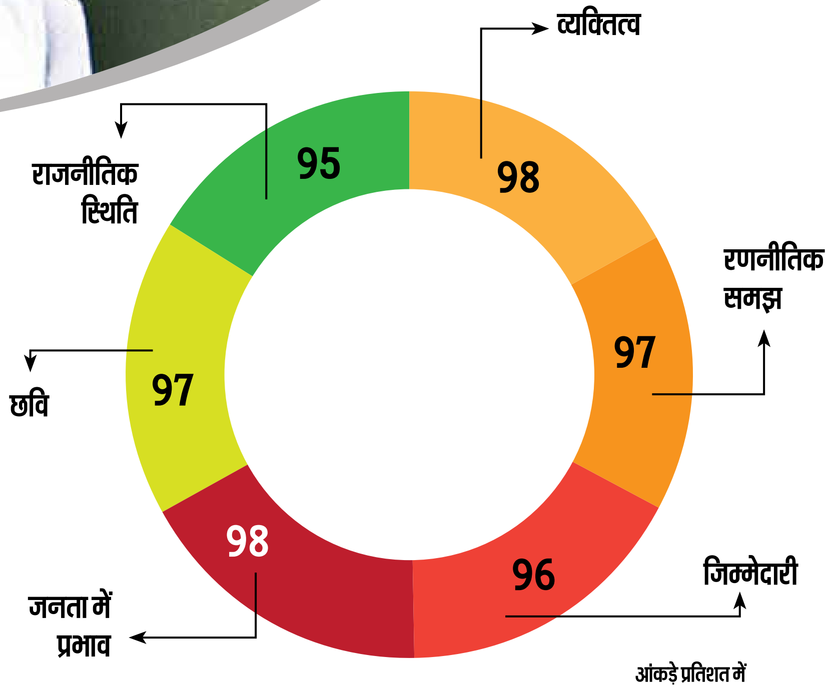

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

गौरवशाली इतिहास के शालीन वारिस

राहुल गांधी

भारत के प्रसिद्द गांधी-नेहरु परिवार की शानदार विरासत के वारिस राहुल गांधी हंसमुख, विनम्र और शिष्ट नेता हैं। वर्तमान में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष हैं। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी राहुल हार मानते नहीं दिखते। चेहरे पर मुस्कान सजाये, विरोधियों के हर वार का जवाब देते राहुल गांधी की लोकप्रियता दिनोंदिन उनके समर्थकों के बीच बढ़ती ही जा रही है।

19 जून 1970 को नई दिल्ली में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी और पूर्व काँग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी के घर जन्मे राहुल गांधी ने प्रारंभिक शिक्षा दिल्ली के सेंट कोलंबस स्कूल और प्रसिद्ध दून विद्यालय में हुई है। राहुल ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय के रोलिंस कॉलेज फ्लोरिडा से साल 1994 में कला में स्नातक किया है। इसके बाद कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कॉलेज से एम। फिल। की उपाधि प्राप्त की।

साल 2004 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश की अमेठी सीट से एक लाख वोटों के अंतर से जीतकर राहुल ने राजनीति में औपचारिक रूप से प्रवेश किया। साल 2004 से 2014 तक कांग्रेस सत्ता में रही लेकिन साल 2014 में बीजेपी के सत्ता पर काबिज़ होने के साथ ही उसके निशाने पर राहुल गाँधी आ गये। सार्वजनिक मंचों और सोशल मीडिया पर राहुल गाँधी को हास-परिहास का विषय बनाया गया, लेकिन राहुल ने अपना धीरज नहीं खोया। उन्होंने अपनी कमियों को पहचाना और लगातार उनपर काम किया। धीरे-धीरे उनकी राजनीतिक पकड़ मजबूत होती गयी।

राहुल गांधी के अध्यक्ष बनते ही कांग्रेस ने गुजरात में भाजपा को कड़ी टक्कर दी। इसके बाद पंजाब में कांग्रेस ने सत्ता हासिल की। कर्नाटक में भले ही कांग्रेस अपने दम पर वापसी नहीं कर सकी, लेकिन जेडीएस-कांग्रेस सरकार गठन में राहुल गांधी ने बाखूबी सांगठनिक कौशल दिखाया और सबसे बड़ी पार्टी बनने के बाद भी भाजपा को सरकार बनाने से रोक दिया। मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ की शानदार जीत ने ना केवल उनके नेतृत्व को सिर्फ धार दी बल्कि उन्हें राष्ट्रीय राजनीति में दमदार तरीके से खड़ा कर दिया। जिस तरह राहुल ने तीनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों का चयन किया है, उससे साफ है कि उन्हें राजनीतिक नफा-नुकसान की पूरी समझ है। वह निजी पसंद की बुनियाद पर नहीं बल्कि जमीनी हकीकत के आधार पर निर्णय लेने लगे।कांग्रेस पार्टी को सॉफ्ट हिंदुत्व की ओर बढ़ाना उनकी राजनीतिक सूझबूझ का परिचय देती है। वैसे कुछ भी कहे बहुत से लोग को अब भी विश्वास है कि महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, वल्लभ भाई पटेल, अंबेडकर और इंदिरा की पार्टी के इस वारिस में अपनी राख से उठ खड़े होने की ताकत है।

लगनशील ★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर राहुल गांधी को लगनशील राजनेता के तौर पर पाया है।

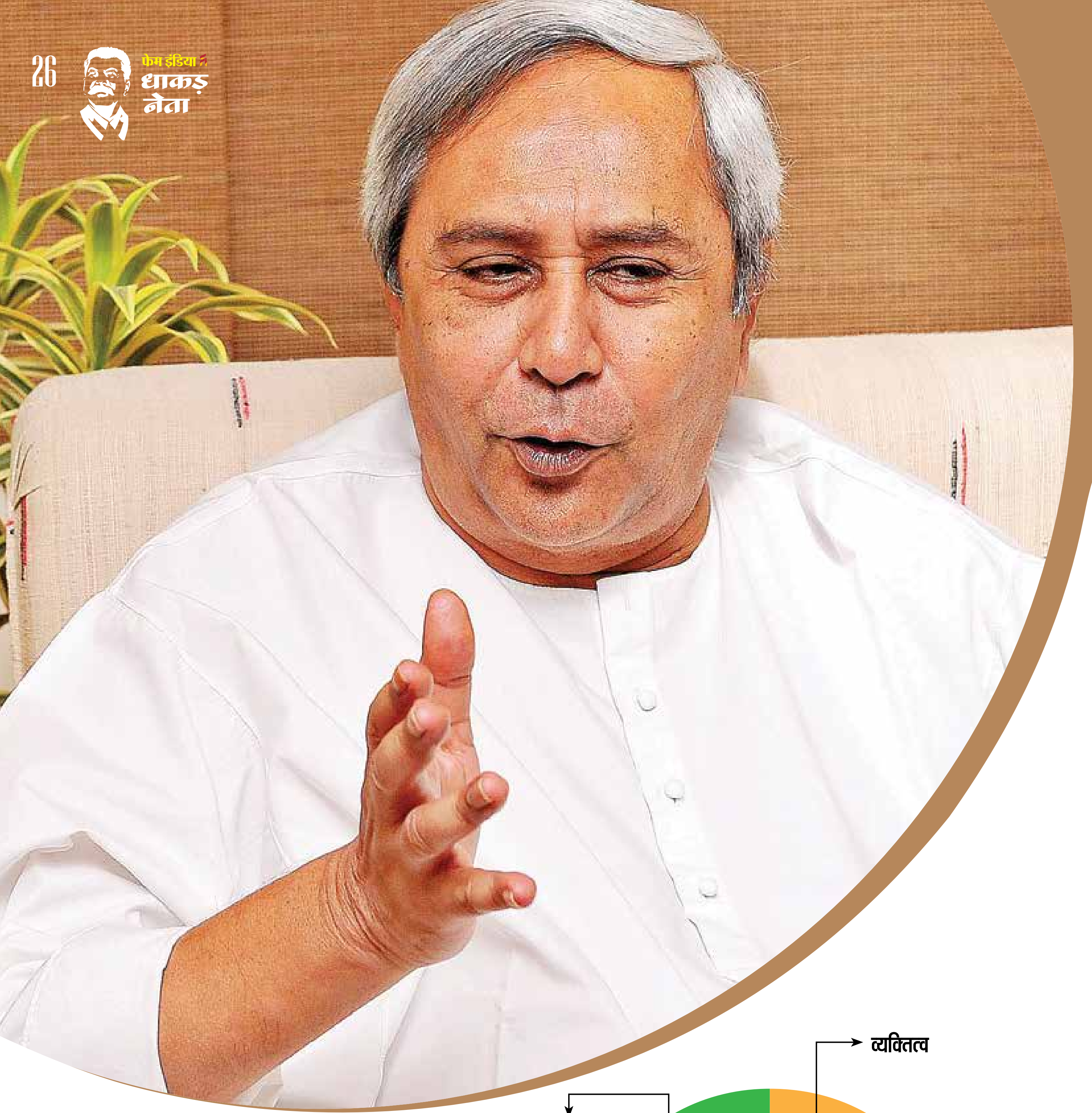

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

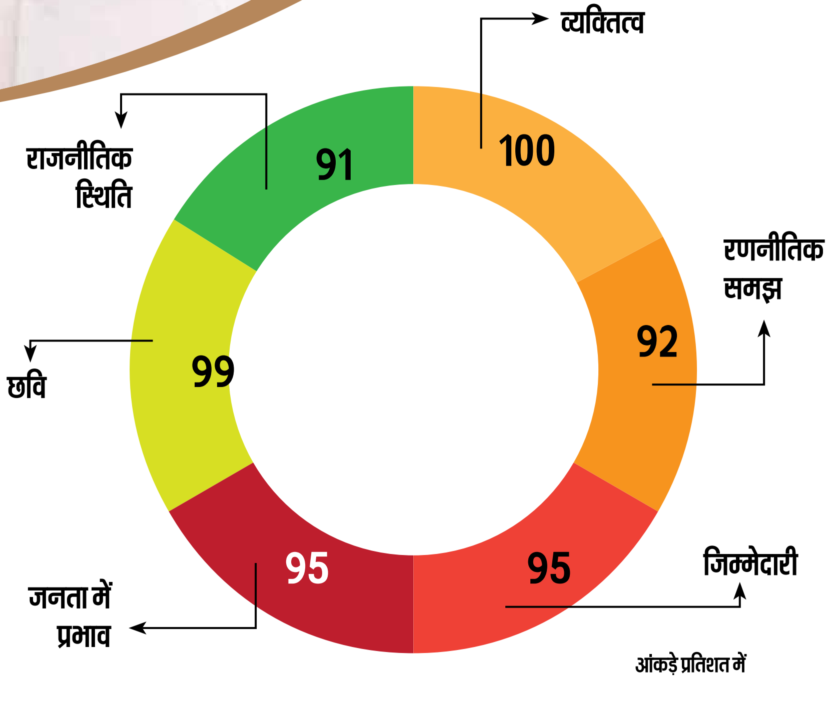

जन-समर्थन और विरासत दोनों के धनी

नवीन पटनायक

अपने पिता के निधन के बाद उनकी पार्टी को मजबूती देने साल 1996 में सियासत में आये नवीन पटनायक की सियासी कहानी काफी करिश्माई है। अब तक राजनीति में डेढ़ दशक से ज्यादा वक्त बिताने के बाद पटनायक ने ये साबित किया है कि वो अपने पिता की विरासत संभालते हुए खुद को देश के सबसे लोकप्रिय और करिश्माई नेता के रूप में स्थापित कर चुके हैं। राजनीति में ईमानदार और स्वच्छ छवि की वजह से उड़ीसा के लोग उन्हें दिल के काफी करीब पाते हैं।

नवीन पटनायक सियासत में नहीं आना चाहते थे। वे एक लेखक के रूप में खुद को स्थापित करना चाहते थे लेकिन पिता की मृत्यु के बाद ना चाहते हुए भी उन्हें राजनीति में आना पड़ा। 16 अक्टूबर 1946 को कटक में जन्मे नवीन पटनायक उड़ीसा के पूर्व मुख्यमंत्री बीजू पटनायक के बेटे हैं। उनकी शिक्षा दून विद्यालय में हुई और बाद में उन्होंने किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली से कला में स्नातक की शिक्षा पूरी की। नवीन पटनायक का युवाकाल लगभग राजनीति और उड़ीसा से दूर ही बीता है। दिलचस्प बात ये कि पटनायक को उड़ीसा की भाषा तक बोलनी नहीं आती है लेकिन हर बार वो जीत का पताका लहरा देते हैं।

नवीन पटनायक का राजनीतिक करियर तब शुरू हुआ, जब उन्होंने 11वीं लोकसभा में जनता दल के टिकट पर अस्का लोकसभा सीट से उपचुनाव जीता। यह उनके पिता की पारंपरिक सीट थी, इसके बाद उन्होंने कभी मुड़ कर पीछे नहीं देखा। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में पटनायक मंत्रिमंडल का हिस्सा भी रहे। उन्होंने पिता के नाम पर बीजू जनता दल का गठन किया। बीजू जनता दल ने उसके बाद विधानसभा चुनावों में जीत दर्ज की और भाजपा के साथ सरकार बनाई जिसमें वो स्वयं मुख्यमंत्री बने। उनकी लोकप्रियता उड़ीसा के लोगों के इस कदर सिर चढ़कर बोलती है कि वे लगातार पांच बार पूर्ण जनाधार के साथ मुख्यमंत्री बनने में सफल हुये। नवीन पटनायक के नाम उड़ीसा के इतिहास में सबसे लम्बे समय तक मुख्यमंत्री बनने का कीर्तिमान है।

हालांकि पटनायक सरकार विवादों से भी घिरी लेकिन उनकी लोकप्रियता का इसपर कोई असर नहीं हुआ। उनके कार्यकाल में गरीबों के लिए शुरू किया गया कार्यक्रम उनके लिए फायदेमंद रहा। पटनायक ने अपनी लोकप्रियता से इस चुनाव में भी अपना रंग जमा दिया है। हकीकत यही है कि वे जनता को अपने करीब लाने की कला जानते हैं। और राज्य में अगले पांच साल तक कोई उन्हे टक्कर देने में सक्षम नहीं दिखता।

आदर्श ★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर नवीन पटनायक को आदर्श राजनेता के तौर पर पाया है।

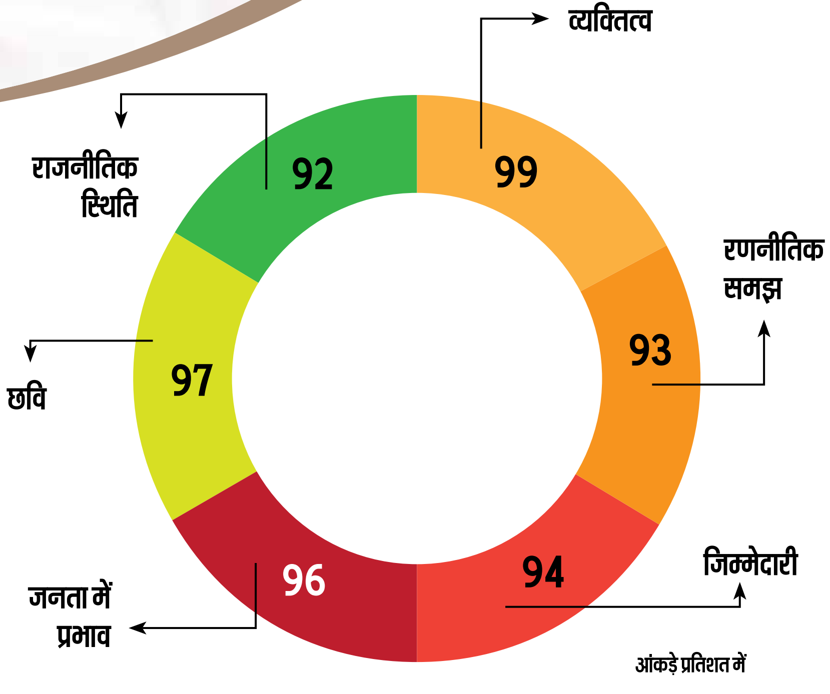

FAME INDIA

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

राष्ट्रवादी राजनेता और लोकप्रिय महाराजा

कैप्टन अमरिंदर सिंह

साल 2017 के पंजाब विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत के हीरो कैप्टन अमरिंदर सिंह राजनीति के कद्दावर नेता हैं। वे पंजाब की राजनीति में स्तंभ माने जाते हैं। धीर-गंभीर अमरिंदर सिंह जनमानस से जुड़े हुए नेता हैं। वर्तमान में वे पंजाब के मुख्यमंत्री हैं और इंडियन नेशनल कांग्रेस के पंजाब कमेटी के अध्यक्ष भी हैं।

पटियाला राजघराने में 11 मार्च 1942 को जन्मे कैप्टन अमरिंदर ने नेशनल डिफेंस एकेडमी और इंडियन मिलिट्री एकेडमी में पढ़ाई के बाद 1963 में भारतीय सेना ज्वाइन कर ली थी हालांकि 1965 के शुरुआत में ही उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। पाकिस्तान से युद्ध शुरू होने की वजह से उन्होंने एक बार फिर सेना ज्वाइन की और 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में बतौर कैप्टन लड़े। युद्ध के बाद उन्होंने फिर से सेना छोड़ दी।

किसी जमाने में राजीव गाँधी के सबसे करीबी रहे अमरिंदर सिंह को सियासत के गलियारों में राजीव गांधी ही लाये थे। अमरिंदर सिंह पहली बार 1980 में लोकसभा चुनाव जीते। लेकिन 1984 में ऑपरेशन ब्लू स्टार के विरोध में उन्होंने लोकसभा और कांग्रेस दोनों की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद उन्होंने शिरोमली अकाली दल की सदस्यता ले ली। उन्होंने राज्य विधानसभा का चुनाव लड़ा और राज्य सरकार में मंत्री बन गए। 1992 में उनका अकाली दल से मोहभंग हुआ और उन्होंने शिरोमणि अकाली दल (पी) के नाम से नई पार्टी बना ली। बाद में इस पार्टी का साल 1998 में कांग्रेस में विलय हो गया। कांग्रेस ने 1999 में कांग्रेस ने अमरिंदर सिंह को प्रदेश अध्यक्ष बना दिया। अमरिंदर ने कांग्रेस की ज़मीन मज़बूत करने का काम किया और साल 2002 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत हुई और कैप्टन पहली बार मुख्यमंत्री बने।

साल 2010 में कांग्रेस ने एक बार फिर अमरिंदर सिंह को प्रदेश अध्यक्ष बनाया और अमरिंदर कांग्रेस की ज़मीन बनाने में जुट गये। 2014 के आम चुनाव में ज़बरदस्त मोदी लहर के बावजूद अमरिंदर ने अमृतसर सीट से अरुण जेटली को चुनाव हरा दिया। साल 2017 के पंजाब विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी को अमरिंदर सिंह की अगुवाई में फिर जीत हासिल हुई तो सीएम की कुर्सी पर अमरिंदर को ही बैठाया गया। इसके बाद उन्होंने अमृतसर लोकसभा सीट से इस्तीफ़ा दे दिया। इनकी पत्नी प्रेनीत कौर भी लोकसभा सांसद हैं।

पंजाब की सियासत में अमरिंदर सिंह रामबाण की तरह ऐसे समय जब देश के कुछ ही राज्यों में कांग्रेस की सरकार है, पंजाब में कांग्रेस की पताका फहराने मे अमरिंदर सिंह कांग्रेस की उम्मीदों पर खरे उतरे हैं।

कामयाब
★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर कैप्टन अमरिंदर सिंह को कामयाब राजनेता के तौर पर पाया है।

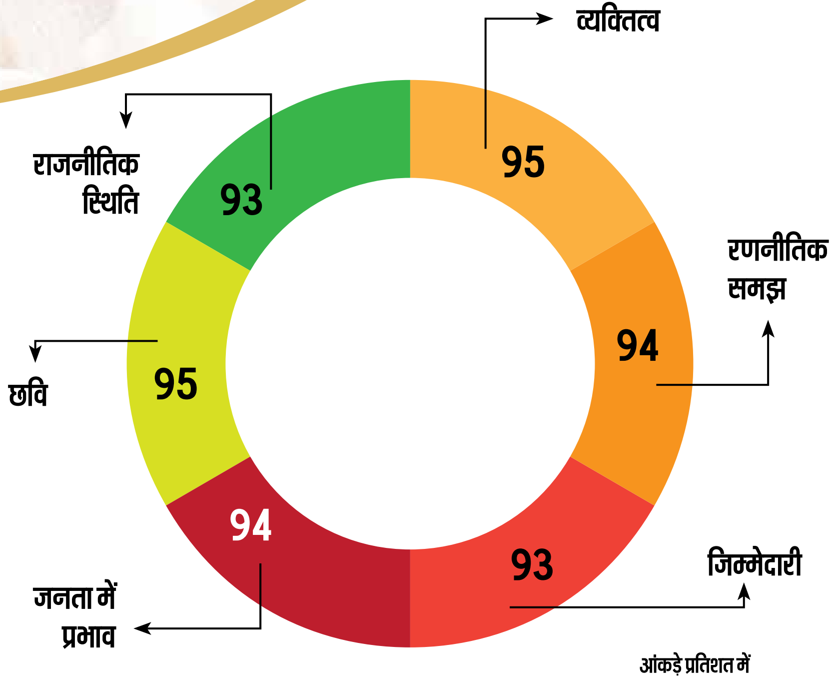

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

जमीन से जुड़ी फायरब्रांड राजनेता

ममता बनर्जी

ममता बनर्जी हिम्मत और आत्मविश्वास का दूसरा नाम है। अपने मज़बूत इरादों के दम पर बंगाल से 34 सालों से सत्ता पर काबिज़ साम्यवादी सरकार को उखाड़ फेंकने वालीं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का भारतीय राजनीति में अपना ख़ास मुकाम है। फिलहाल वे दोबारा सत्ता में हैं। अपने विद्रोही स्वभाव के लिए मशहूर ममता को उनकी सादगी के लिए भी जाना जाता है और अपने प्रशंसकों के बीच वे 'दीदी' के नाम से भी चर्चित हैं।

ममता निचले मध्यम वर्गीय परिवार 5 जनवरी 1955 को जन्मीं में थीं। नौ साल की उम्र में ही उनके पिता का निधन हो गया था। उन्होंने जिंदगी को बहुत मुश्किलों और गरीबी में काटा है, शायद यही वजह है कि गरीबों के दर्द को उन्होंने हमेशा अपनी सियासत में जगह दी, और अपनी ज़िंदगी में सादे जीवन के सियासी विचार को। ममता बनर्जी ने जोगमया देवी कॉलेज, दक्षिण कोलकाता, से इतिहास विषय में बीए और कोलकाता विश्वविद्यालय से इस्लामिक इतिहास में एम.ए. किया है। उन्होंने बीएड औरकानून की पढ़ाई भी की है।

ममता बनर्जी की कॉलेज के दिनों से ही राजनीति में दिलचस्पी थी और यहीं से उन्होंने सियासत का ककहरा सीखा। 1970 से कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता के तौर पर ममता ने राजनीतिक सफ़र की शुरुआत की। साल 1976 से 1980 तक वह महिला कांग्रेस की महासचिव रहीं। 1984 में ममता बनर्जी ने सीपीएम के कद्दावर नेता सोमनाथ चटर्जी को जादवपुर लोकसभा सीट से हराकर सबको चौंका दिया। वे देश की सबसे युवा सांसद बनीं। साल 1997 में ममता कांग्रेस से अलग हो गईं। इसके अगले ही साल 1 जनवरी 1998 को उन्होंने अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस बनाई। वह पार्टी की अध्यक्ष बनीं और 1998 के लोकसभा चुनाव में टीएमसी ने 8 सीटों पर कब्ज़ा किया।

ममता बनर्जी के नाम देश की पहली महिला रेल मंत्री बनने का गौरव भी है। 'मां, माटी और मानुष' का नारा बुलंद करने वाली ममता केंद्र में दो बार रेल मंत्री रह चुकी हैं। इसके अलावा वे केंद्र सरकार में कोयला, मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री, युवा मामलों और खेल के साथ ही महिला व बाल विकास की राज्य मंत्री भी रह चुकी हैं।

साल 2011 में ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल में 34 वर्षों से सत्ता पर काबिज़ वामपंथी मोर्चे का सफाया किया और मुख्यमंत्री बनीं, जिसके बाद 2012 में प्रतिष्ठित 'टाइम' मैगजीन ने उन्हें 'विश्व के 100 प्रभावशाली' लोगों की सूची में स्थान दिया था। 2016 के विधानसभा चुनावों में उन्होंने दोबारा करिश्मा दिखाया और फिर सीएम की कुर्सी पर काबिज़ हुईं।

हमेशा बंगाली सूती साड़ी और हवाई चप्पल में नज़र आने वालीं ममता बनर्जी को 'स्ट्रीट फाइटर' के नाम से भी जाना जाता है।विपक्ष की नेता की हैसियत से ममता की छवि एक दबंग और ईमानदार नेता के रूप में है।

सक्रिय

★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर ममता बनर्जी को सक्रिय राजनेता के तौर पर पाया है।

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

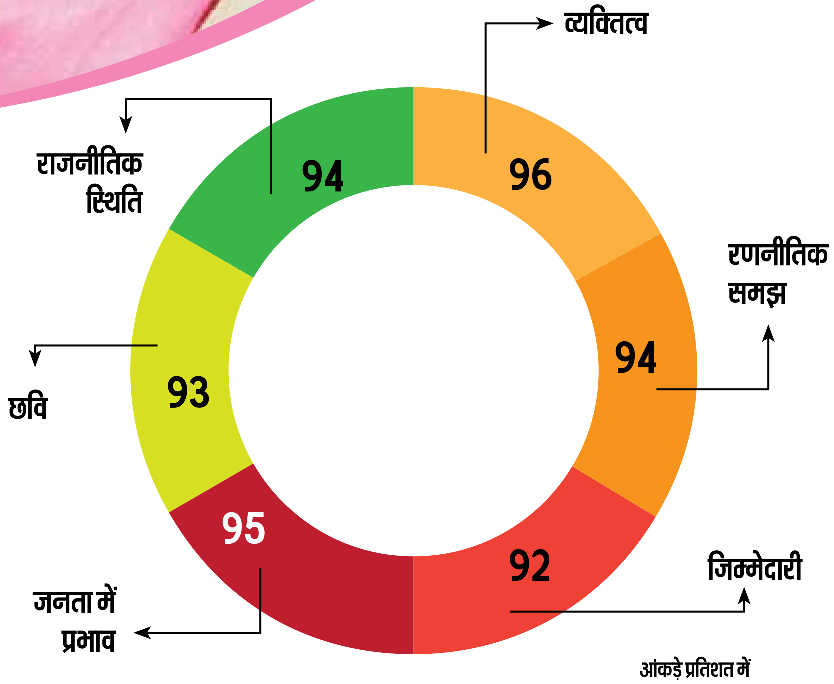

नये तेलंगाना के आधुनिक रचयिता

के चंद्रशेखर राव

नव तेलंगाना के रचयिता के. चंद्रशेखर राव जो केसीआर के नाम से विख्यात हैं इस प्रदेश के प्रथ मुख्यमंत्री हैं। तेलंगाना में वे उस सूर्य के समान हैं जिसके तेज में भाजपा व कांग्रेस सरीखी पार्टियां भी छांव ढूंढ रही हैं। यह बात 2018 के विधानसभा चुनाव में साबित हो चुकी है।

ओसमानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से साहित्य में एमए के पूरा होने के बाद, उन्होंने युवा कांग्रेस के साथ राजनीति की शुरुआत की। वे कांग्रेस के मुश्किल दिनों में भी पार्टी के यूथ आइकॉन रहे संजय गांधी के साथ खड़े रहे। 1983 में वे तेलगूदेशम पार्टी यानी टीडीपी में शामिल हो गये और सिद्दीपेट से चार बार विधायक चुने गये। वे एनटी रामाराव के करीबी थे और उनकी सरकार में कैबिनेट मंत्री भी बने। जब चंद्रबाबू नायडू ने सत्ता संभाली तो भी उनका कद कम नहीं हुआ और वे वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री औऱ फिर विधान सभा के डिप्टी स्पीकर बने।

वे तेलंगाना से थे और अकसर अलग राज्य की मांग उठाते रहे थे। उनका मानना है कि सदियों पुरानी तेलगु संस्कृति को बचाना औऱ उसे नयी दिशा देना आवश्यक है। करीब दो दशकों तक टीडीपी के साथ रहने के बाद 2001 में उन्होंने पार्टी से इस्तीफा दे दिया और अपनी नयी पार्टी तेलंगाना राष्ट्र समिति यानी टीआरएस का गठन किया। वे महबूबनगर, करीमनगर और मेडक के सांसद भी रहे और केंद्र की यूपीए सरकार में मंत्री भी बने। अगस्त 2006 में, उन्होंने तेलंगाना के कारण केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। करीब एक दशक तक आंदोलन चलने के बाद जब 2014 में तेलंगाना अलग राज्य बना तो वे पहले मुख्यमंत्री बने। 2018 में उन्होंने समय पूरा होने से पहले ही विधानसभा भंग कर दी और दोबारा पहले से भी अधिक बहुमत से सरकार बनायी।

के चंद्रशेखर राव के नेतृत्त्व में टीआरएस सरकार ने कृषि को बढ़ावा देने की दिशा में एक मिसाल कायम की है और 1 लाख करोड़ की लागत से कालेश्वरम नाम की समग्र कृषि विकास योजना शुरू की। 17 हजार करोड़ की लोन योजना चलायी जिससे 38 लाख किसानों को फायदा पहुंचा। इसके अलावा उनकी हरिताहरन और कृषि निवेश योजनाएं भी काफी लोकप्रिय रहीं। वे ज्योतिष, अंक विज्ञान और वास्तु में काफी विश्वास रखते हैं और कोई भी महत्वपूर्ण काम या उद्घाटन आदि के लिये समय तय करने से पहले हमेशा विशेषज्ञों की सलाह लेते हैं। नंबर '6' उनका भाग्यशाली नंबर माना जाता है।

क्षमतावान
★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर के चंद्रशेखर राव को क्षमतावान राजनेता के तौर पर पाया है।

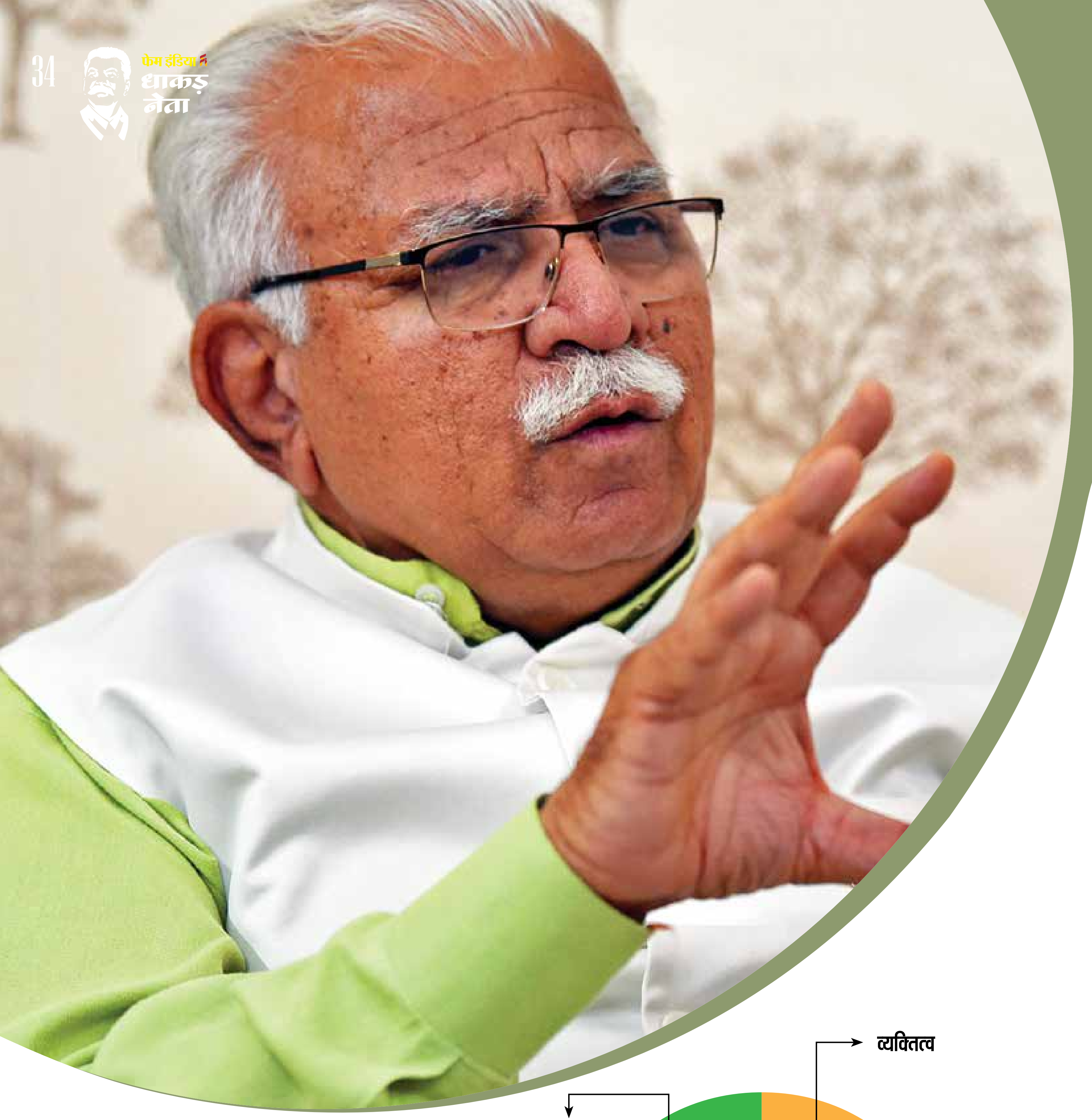

FAME INDIA Fi

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

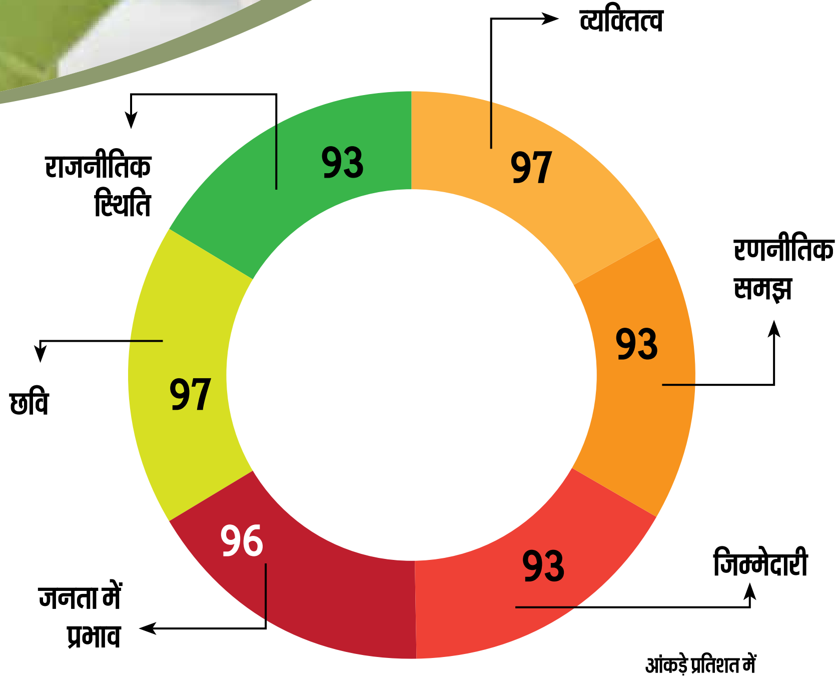

हरियाणा की कायापलट करने वाले बाजीगर

मनोहर लाल खट्टर

हरियाणा में विकास और सुशासन के पर्याय के तौर पर लोकप्रिय मनोहर लाल ऐसे पहले मुख्यमंत्री हैं जिन्होंने अपने शासनकाल में प्रदेश को विकास का एक मॉडल बना दिया है। आज देश भर के राज्यों की सरकारें हरियाणा से प्रेरणा ले रही हैं।

मनोहर लाल का जन्म 5 मई, 1954 में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। उनके दादा भगवान दास खट्टर अपने परिवार के साथ देश के विभाजन के समय पाकिस्तान से रोहतक के निंदाना आये थे। मनोहर लाल 4 साल के थे तो उनके पिता हरबंस लाल खट्टर पड़ोस के ही बनियानी गांव में आ गये। निंदाना में उनके दादा और पिता की दुकान थी जबकि बनियानी में उन लोगों ने खेती के लिए जमीन ख़रीदी थी। वे न सिर्फ अपने पिता की खेतों और मंडियों में मदद किया करते थे, बल्कि स्कूल की गतिविधियों में भी काफी आगे थे। उनकी तीव्र बुद्धि और गंभीर स्वभाव के कारण उनके साथी उन्हें हेडमास्टर कह कर बुलाते थे। दसवीं पास करने के बाद वे दिल्ली चले गये जहां सदर बाज़ार में कपड़ों का व्यवसाय शुरू किया। साथ ही उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से ग्रैजुएशन भी किया। बाद में वे संघ के प्रचारक बन गये और फिर वर्ष 1994 में भाजपा की संगठनात्मक राजनीति में शामिल हो गये।

भाजपा में उनकी छवि एक सुलझे हुए अनुशासित नेता की रही है। वे संगठन मंत्री थे और 1996 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने बंसीलाल की पार्टी के साथ मिलकर लड़ा था। बंसीलाल भाजपा के समर्थन से मुख्यमंत्री बने थे। 2002 में पार्टी ने उन्हें जम्मू-कश्मीर का प्रभारी बनाया। वे नरेंद्र मोदी के करीबियों में शुमार हैं और उन्हीं की तरह राष्ट्र को समर्पित हैं। वे विकासवादी सोच रखने वाले और कंप्युटर के माहिर प्रशासक हैं।

26 अक्टूबर 2014 को उन्होने हरियाणा के 10 वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी। उस वक्त हरियाणा का सरकारी खजाना लगभग खाली हो चुका था और प्रदेश में चारों ओर भ्रष्टाचार, अव्यवस्था और असुरक्षा का माहौल था। सत्ता संभालने के साथ ही उन्होंने प्रदेश के सभी विभागों व उनके कार्यों को कमप्युटराइज़ कर दिया जिससे भ्रष्टाचार पूरी तरह खत्म हो गया। प्रशासन को सख्त किया और अपराध पर नकेल कसी। कन्या भ्रूण हत्या के लिये दशकों से बदनाम रहे हरियाणा का लिंगानुपात राष्ट्रीय औसत से भी ऊंचा करने और बिजली वितरण कंपनियों को फायदे में पहुंचाने जैसी उपलब्धियों ने उन्हें देश के सबसे कार्यकुशल प्रशासकों में ला खड़ा किया है। आज हरियाणा 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' में उत्तर भारत का नंबर वन राज्य है और दुनिया भर के व्यापारी वहां उद्योग-धंधे लगा रहे हैं। प्रदेश के हर कोने में सिंचाई का पानी पहुंचाने और वैज्ञानिक खेती को बढ़ावा देने की वजह से वे किसानों के बीच काफी लोकप्रिय है। भरती-बदली में पारदर्शिता, शिक्षा में सुधार, गोरक्षा कानून, अन्योदय सरल, राशन वितरण के डिजिटाइजेशन जैसे अनेकों कदमों से मनोहर लाल एक करिश्माई मुख्यमंत्री बन कर उभरे हैं।

जननायक

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर मनोहर लाल खट्टर को जननायक राजनेता के तौर पर पाया है।

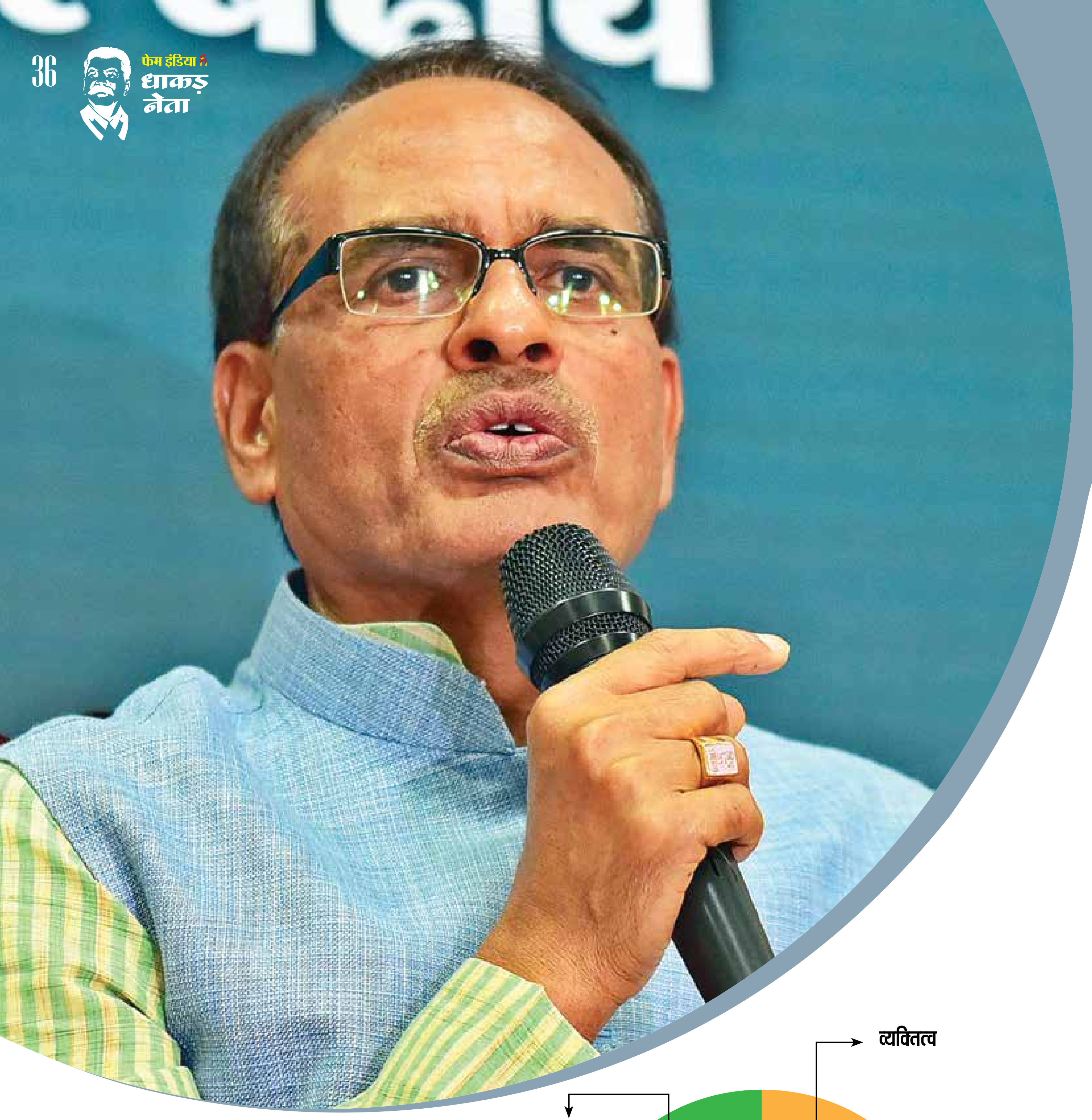

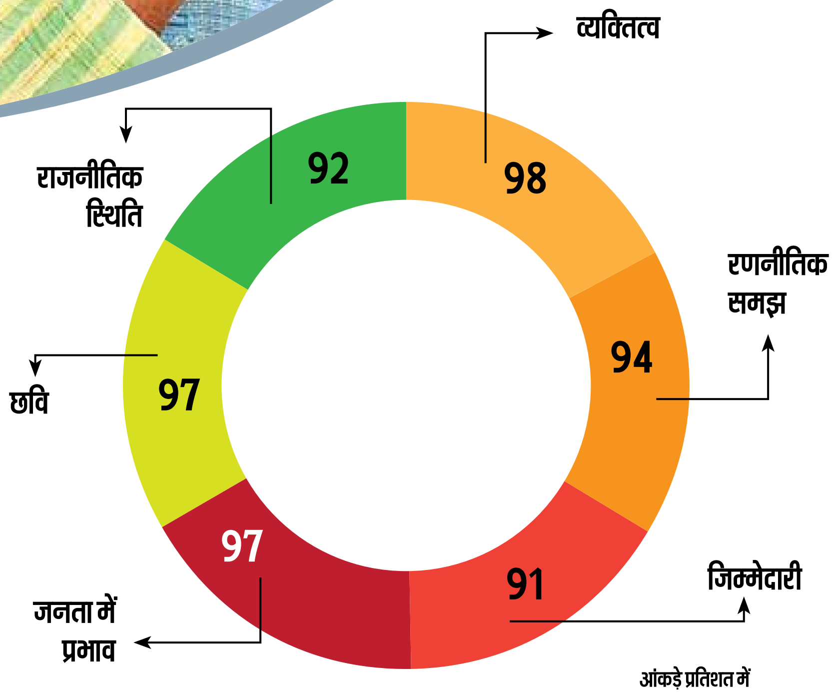

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

संघर्षों के दम पर पहुंचे फर्श से अर्श तक

शिवराज सिंह चौहान

शिवराज सिंह चौहान एक ऐसे जन नेता हैं जो जनता के दिलों पर एकछत्र राज करते हैं। परिवार से कोई सियासत में नहीं था लेकिन छोटे से गाँव से शुरू हुई शिवराज की सियासत की कहानी मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुँच गयी। वे लगातार तीन बार मध्य प्रदेश के सीएम रहे हैं। 5 मार्च 1959 में मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के किसान परिवार में जन्मे शिवराज सिंह शुरू से ही एक अलग, बड़ी और गहरी लकीर खींचने वालों में से रहे हैं। मजदूरों के साथ होने वाले अत्याचार के खिलाफ शिवराज ने काफी छोटी उम्र से ही आन्दोलन छेड़ दिया था।

परिवार वालों ने उन्हें पढ़ाई-लिखाई के लिए भोपाल भेज दिया जहाँ चाचा की देखरेख में उनकी पढ़ाई शुरू हुई। दसवीं में शिवराज ने जीवन में पहली बार कोई चुनाव लड़ा। सांस्कृतिक सचिव के इस चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पड़ा लेकिन इस हार को उन्होंने हिम्मत में बदल लिया। साल भर बाद अध्यक्ष का चुनाव लड़ा। परिणाम आया तो इतिहास के पन्नों में लिखा गया। ये बुनियाद थी भविष्य में बड़े नेता के बनने की।

1975 में आपातकाल का विरोध करने के लिए शिवराज को जेल जाना पड़ा। शिवराज सिंह चौहान ने बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय से एमए की पढ़ाई की है और गोल्ड मेडलिस्ट रहे हैं। साल 1977 में शिवराज आरएसएस से जुड़ गये और एबीवीपी के संगठन मंत्री बने। इसके बाद कई अलग-अलग पद पर रहते हुए शिवराज संगठन और पार्टी से जुड़े रहे। साल 1990 में पहली बार उन्हें बुधनी विधानसभा सीट से जीत मिली जिसके साल भर बाद ही वे संसद पहुँच गये। 1996 में उन्हें पार्टी ने विदिशा से टिकट दिया। यहाँ भी उन्हें जीत मिली। साल 2004 में जब देशभर में बीजेपी को करारी हार मिली थी उस वक्त भी शिवराज ने विदिशा ने जीत का पताका फहराया था। दिल्ली तक शिवराज की जीत की चर्चा होने लगी, ये उनके बढ़ते कद का परिणाम था।

साल 2005 में उन्हें एमपी बीजेपी का अध्यक्ष बना दिया गया। उमा भारती की नाराज़गी के बाद प्रदेश को संभालने वाला एक साफ़-सुथरी छवि वाला नेता चाहिए था इसलिए ज़िम्मेदारी शिवराज सिंह को सौंपी गयी। इसी साल हुए चुनाव में बीजेपी को जीत मिली और शिवराज सिंह को मुख्यमंत्री बनाया गया। उनके मुख्यमंत्री बनते ही प्रदेश में बिजली, पानी, सड़क सबके हालात बदलने लगे और जनता का उनपर भरोसा बढ़ा। जनता ने उनको 2008 में दूसरी बार भी मुख्यमंत्री चुना। एक के एक बाद एक कई लोक कल्याणकारी फैसलों से शिवराज की लोकप्रियता बढ़ती चली गयी। लोगों पर उनकी पकड़ इस कदर बढ़ी कि एमपी जैसा सूबा उन्होंने 2013 में लगातार तीसरी बार जीत लिया।

2018 के विधानसभा चुनाव में भले ही उन्हें हार मिली हो लेकिन लोगों में उनकी लोकप्रियता कम नहीं हुई है। वे उनके लिए अभी भी उनके प्यारे 'मामा' हैं। शिवराज 2019 के आम चुनाव में मध्यप्रदेश में हुई बडी जीत के एक मजबूत रणनीतिकार माने जाते हैं।

उर्जावान ★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर शिवराज सिंह चौहान को उर्जावान राजनेता के तौर पर पाया है।

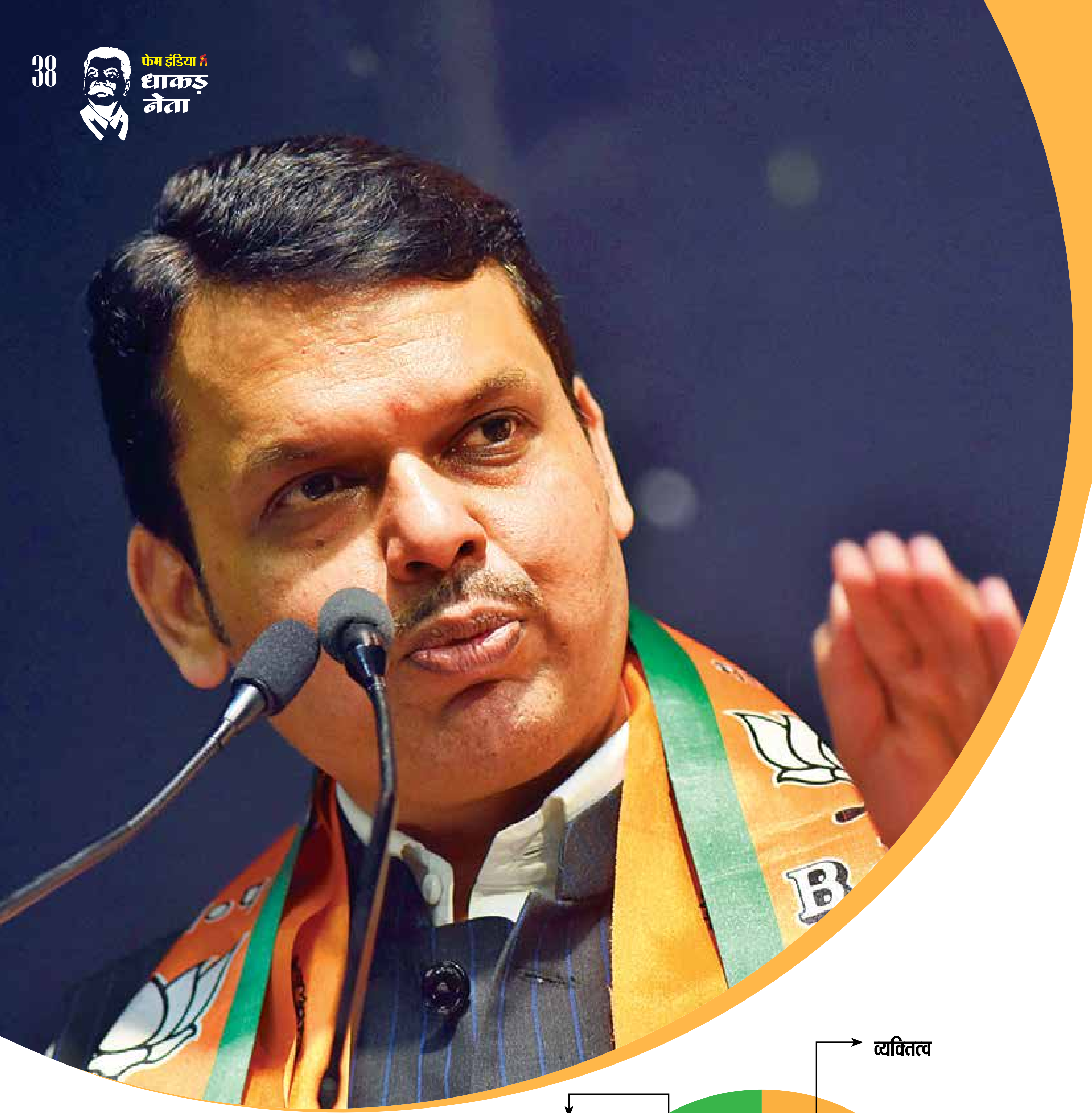

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

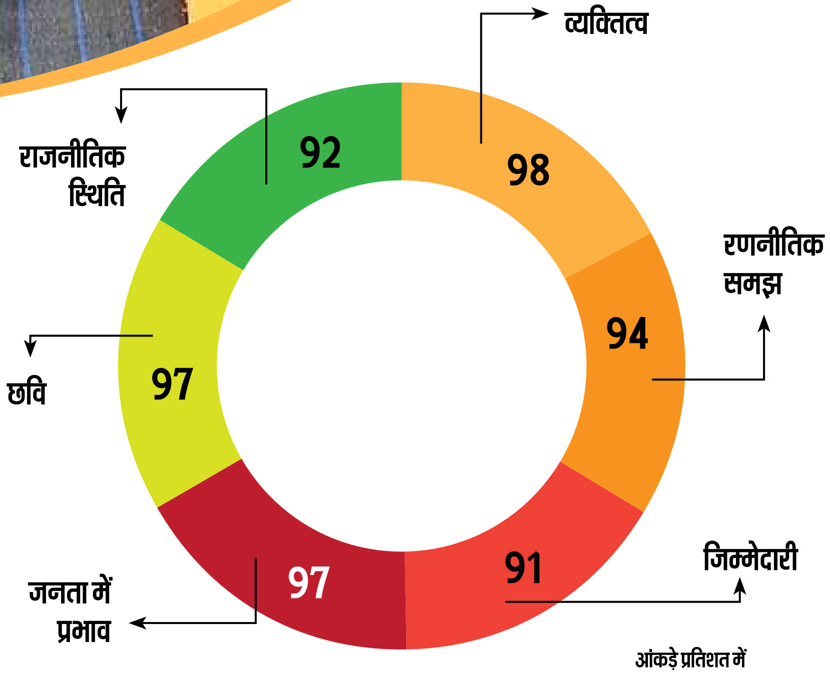

बदलते महाराष्ट्र के लोकप्रिय युवा मुखिया

देवेंद्र फडणवीस

कॉरपोरेटर से नागपुर के सबसे युवा मेयर और फिर महाराष्ट्र के दूसरे सबसे युवा मुख्यमंत्री। देवेंद्र गंगाधर राव फडणवीस आज जिस मुकाम पर हैं उसे पाने में बड़े-बड़ों की सारी उम्र निकल जाती है। शांत और मृदुभाषी फडणवीस महाराष्ट्र की राजनीति में बीजेपी का सबसे लोकप्रिय युवा चेहरा हैं। वर्तमान में वे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री हैं। महाराष्ट्र विधानसभा में वे नागपुर दक्षिण पश्चिम सीट का प्रतिनिधित्व करते हैं।

देवेन्द्र गंगाधरराव फडणवीस महाराष्ट्र की राजनीति का वो नाम है जिसने अपने पिता से राजनीति विरासत मिलने के बावजूद अपनी अलग पहचान बनाई। फडणवीस ब्राह्मण परिवार से ताल्लुक रखते हैं। पिता की ही भांति उनकी भी आरएसएस में गहरी जड़ें हैं। 22 जुलाई 1970 को नागपुर, महाराष्ट्र में जन्मे देवन्द्र ने लॉ से स्नातक किया है। इसके अलावा उन्होंने बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई भी की है। देवेन्द्र युवावस्था में ही राजनीति में उतर गए थे। अपने कॉलेज के दिनों में वे एबीवीपी के एक सक्रिय सदस्य थे। एबीवीपी के कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने ज़मीनी स्तर पर राजनेताओं के लिए काम किया है।

महज 22 साल की उम्र में फडणवीस नागपुर स्थानीय निकाय से कॉरपोरेटर बन गए और 27 साल की आयु में 1997 में नागपुर के सबसे युवा मेयर चुने गए। फडणवीस ने 1999 में पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ा और इसमें जीत हासिल की। एक अलग विदर्भ राज्य के इस मजबूत पैरोकार ने फिर कभी पलटकर पीछे नहीं देखा और लगातार तीन विधानसभा चुनावों में जीत हासिल की। बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष के तौर पर फडणवीस के कुशल चुनाव प्रबंधन के ही कारण साल 2014 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी।

फडणवीस एक साफ़-सुथरी छवि वाले नेता हैं जिन पर आम जनता भरोसा करती है। वे बीजेपी के उन नेताओं में हैं जिन्हें पार्टी के आलाकमान का पूरा समर्थन है। मुख्यमंत्री बनने से पहले देवेन्द्र किसी मंत्री पद पर नहीं रहे हैं लेकिन बतौर मुख्यमंत्री उनकी प्रशासनिक क्षमता प्रशंसनीय है। महाराष्ट्र महापालिका चुनावों में बीजेपी की ऐतिहासिक कामयाबी में भी वे एक बड़े नायक के रूप में उभरकर सामने आए हैं। कुल मिलाकर देवेन्द्र फडणवीस की बेदाग़ व भरोसेमंद छवि, विनम्र स्वभाव और ज़बरदस्त नेतृत्व क्षमता उनको एक जननायक के रूप में स्थापित करती है।

2019 के आम चुनाव में देवेंद्र ने आक्रामक तेवर इख्तियार किया। उन्होंने शिवसेना को साफ़ कर दिया था कि बीजेपी शिवसेना से गठबंधन चाहती है लेकिन लाचार नहीं है। फडणवीस के नेतृत्व में महाराष्ट्र में बीजेपी की ज़मीन और मज़बूत हुई है।

प्रतिभाशाली ★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर देवेंद्र फडणवीस को प्रतिभाशाली राजनेता के तौर पर पाया है।

FAME INDIA

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

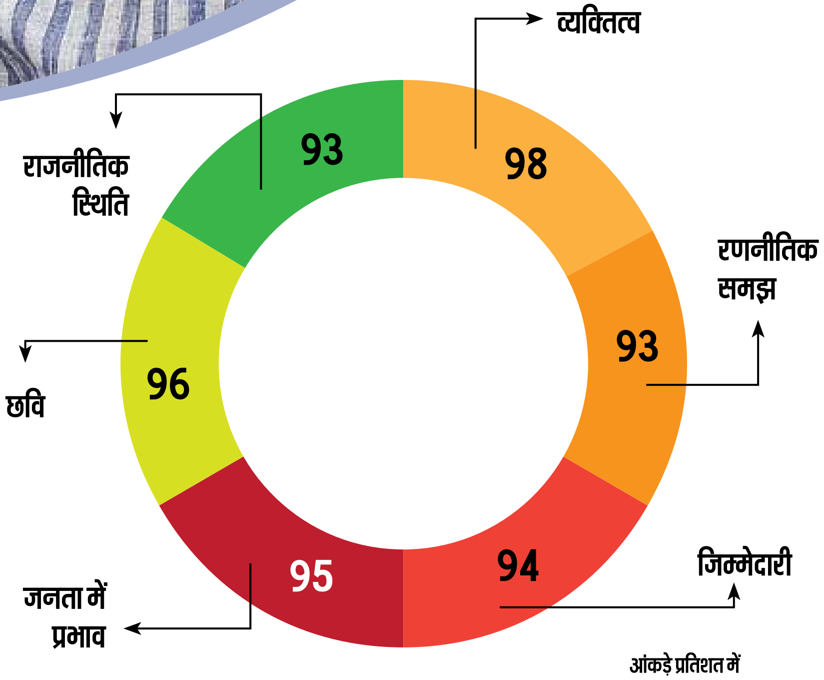

आंकड़े प्रतिशत में

स्वच्छ छवि के सलीकेदार रणनीतिकार

विजय रूपाणी

गुजरात में बीजेपी की विजय पताका लहरा रहे विजय रूपाणी स्वच्छ छवि और सलीके से काम करने के लिए मशहूर हैं। युवाओं पर इनका जादू सिर चढ़कर बोलता है। कभी बेटे की मौत से क्षुब्ध होकर राजनीति से संन्यास लेने का मन बना चुके रूपाणी गुजरात राजनीति के स्तंभ के तौर पर देखे जाते हैं। उन्हें संगठन के लिए काम करने का अच्छा-खासा अनुभव है। वर्तमान में वे गुजरात के मुख्यमंत्री हैं और राजकोट पश्चिम से गुजरात विधानसभा के सदस्य हैं।

जैन बनिया समुदाय से ताल्लुक रखने वाले विजय रूपाणी का जन्म 2 अगस्त, 1956 को तत्कालीन बर्मा की राजधानी रंगून में हुआ था। उन्होंने क़ानून की पढ़ाई की है। आरएसएस में गहरी जड़ें रखने वाले रूपाणी कॉलेज के दिनों में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़े हुए थे। वे गुजरात के उन चुनिंदा नेताओं में शुमार हैं, जो आपातकाल के दौरान जेल गए। रूपाणी ने राजनीतिक करियर की शुरुआत 1987 में राजकोट नगर निगम चुनावों से की। वे 1996 से 1997 तक राजकोट के मेयर रहे। इसके बाद 1998 में रूपाणी भाजपा के गुजरात इकाई के महासचिव बने। 2006 में वे गुजरात पर्यटन के अध्यक्ष नियुक्त किए गए। 2006 से 2012 तक राज्यसभा सदस्यरहे फिर साल 2014 में वे पहली बार विधानसभा पहुंचे। रूपाणी को केशुभाई पटेल के जमाने में पार्टी ने मेनिफेस्टो कमेटी का अध्यक्ष बनाया था।

विजय रूपाणी को कुशल चुनाव प्रबंधन के लिए भी जाना जाता है। साल 2007 और 2012 के विधानसभा चुनाव हों या 2014 के आम चुनाव। पार्टी की रणनीति को बूथों तक पहुंचाने में उनकी अहम भूमिका रही है। उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह का बेहद करीबी माना जाता है। वक़्त के साथ रूपाणी का कद पार्टी में बढ़ता गया और आनंदीबेन पटेल के कार्यकाल में उन्हें परिवहन, जल आपूर्ति, श्रम और रोजगार मंत्रालय की ज़िम्मेदारी दी गई। इस कार्यकाल के दौरान उन्होंने कुशल प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया। साल 2016 में ये छः महीने बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष के पद पर भी आसीन रहे फिर इन्हें मुख्यमंत्री बना दिया गया। ये सौराष्ट्र क्षेत्र से आने वाले छठे मुख्यमंत्री बने। साल 2017 के विधानसभा चुनाव में जब बीजेपी पर पाटीदार आन्दोलन का संकट मंडराया तो तो रूपाणी ने संकटमोचन बनकर आंदोलन के नकारात्मक प्रभाव को ख़त्म किया और गुजरात के सियासी आकाश में एक बार फिर बीजेपी का परचम लहरा उठा। रूपाणी दोबारा मुख्यमंत्री के पद पर काबिज़ हुए।

ये रूपाणी का सबको साथ लेकर चलने का ही नतीजा है कि उनके नाम पर पार्टी में सबके स्वर एक से रहते हैं। इस आम चुनाव में भी पार्टी का विजयध्वज थामे विजय रूपाणी गुजरात में बीजेपी को नई बुलंदियों तक लेकर आए हैं।

कर्मठ ★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर विजय रुपाणी को कर्मठ राजनेता के तौर पर पाया है।

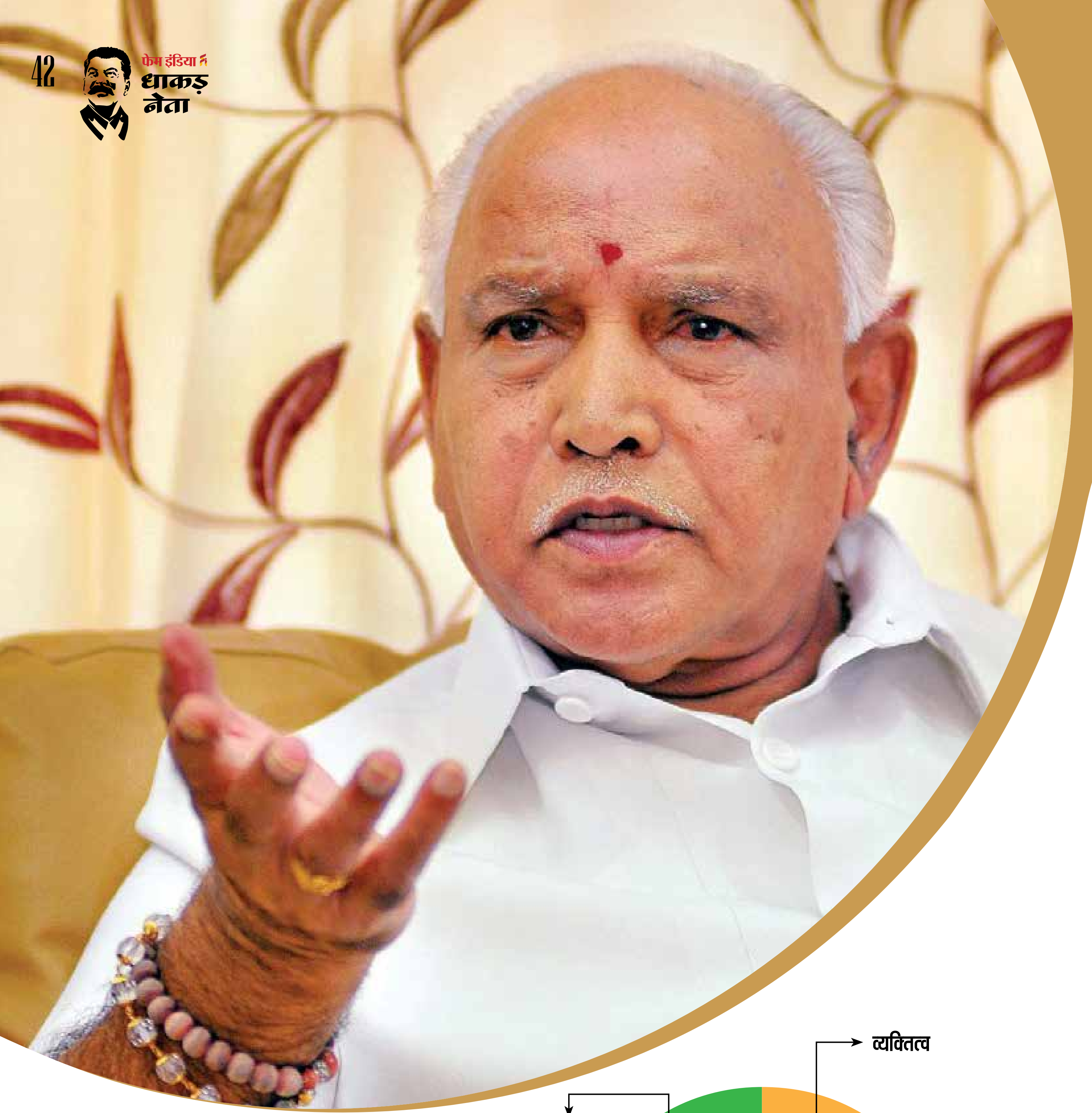

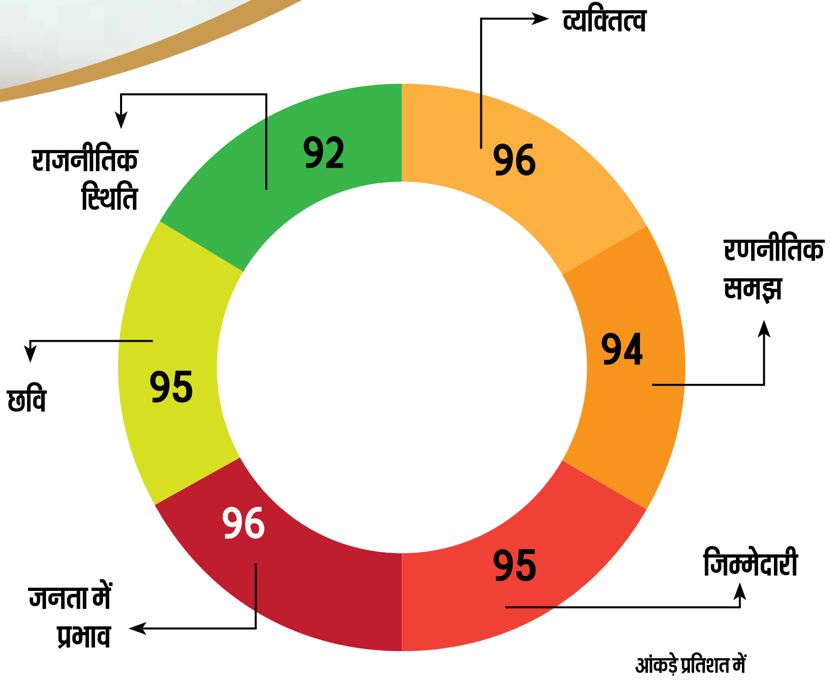

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

जोशीला व्यक्तित्व और करिश्माई लोकप्रियता

बी एस येदियुरप्पा

कर्नाटक में बीजेपी के दिग्गज नेता 75 वर्षीय येदुरप्पा एक ऐसे नेता हैं जिनके तेवर युवा नेताओं पर भारी पड़ते दिखते हैं। दमदार छवि वाले येदुरप्पा कभी चावल मिल के क्लर्क थे, फिर किसान नेता बने और इससे बाद वो ऐसे कद्दावर नेता बन गए जिसने बीजेपी के लिए दक्षिण में दो-दो बार सरकार का दरवाजा खोला। वर्तमान में येदुरप्पा कर्नाटक विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका निभा रहे हैं।

कर्नाटक राज्य के मांड्या जिले के बूकनाकेरे गाँव में 27 फ़रवरी 1943 को जन्मे बूकानाकेरे सिद्धलिंगप्पा येदुरप्पा कला स्नातक हैं। वे आपातकाल के दौरान जेल भी गए। नेतृत्व जनाधार और मानव संसाधन प्रबंधन की शुरुआती दीक्षा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से हासिल करने वाले येदुरप्पा ने भूमिहीन किसानों और बंधुआ मजदूरों की समस्याओं को उठाने के लिए बहुत से बड़े आंदोलन किए। लिंगायत समुदाय के इस दिग्गज नेता को किसानों की आवाज़ उठाने के लिए जाना जाता है। जनसंघ से अपनी राजनीतिक पारी की शुरुआत करने वाले येदुरप्पा अपने गृहनगर शिवमोगा जिले के शिकारीपुरा में भाजपा के अगुवा रहे।

1970 के दशक के शुरुआत में वह शिकारीपुरा तालुका से जनसंघ प्रमुख बने। वर्तमान में शिवमोगा लोकसभा सीट का प्रतिनिधित्व कर रहे येदियुरप्पा वर्ष 1983 में शिकारीपुरा विधानसभा सीट से पहली बार विधायक चुने गए। फिर इस सीट का उन्होंने पांच बार प्रतिनिधित्व किया। साल 1994 और 2004 में उन्हें कर्नाटक विधानसभा में विपक्ष का नेता बनाया गया। साल 2006 में येदुरप्पा ने जेडीएस के साथ मिलकर कर्नाटक में सरकार बनाई लेकिन जेडीएस ने इस गठबंधन से किनारा कर लिया और येदुरप्पा की सरकार मात्र 7 दिन चली। इस झटके के बाद येदियुप्पा ने कर्नाटक में बीजेपी को मजबूत किया और साल 2008 में जीत कर बीजेपी सरकार बनाई।

कुशल रणनीतिकार येदुरप्पा ने अपने राजनीतिक सफर में तमाम विपरीत परिस्थितियों में किसी मंजे हुए नेता की तरह चुनौतियों का सामना किया है और खुद को राजनीतिक धुरंधर के रूप में साबित किया है। येदुरप्पा के कद का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि साल 2011 में जब बीजेपी से खफ़ा येदुरप्पा ने बग़ावत का बिगुल बजाया तो बीजेपी के हाथों से सत्ता निकल गयी। बीजेपी को पता था कि येदुरप्पा का जादू ही कर्नाटक में कमल खिला सकता है। इसलिए 2014 के लोकसभा चुनाव में मोदी येदुरप्पा को बीजेपी में वापस लेकर आए। कर्नाटक में लोकसभा की बीजेपी ने तब 17 सीटें जीतीं। साल 2018 के विधानसभा चुनाव में भी येदुरप्पा के नेतृत्व में बीजेपी एक बार कर्नाटक में फिर सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। येदुरप्पा ने तीसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ भी ली लेकिन फ्लोर टेस्ट पास करने में विफल रहे। ऐसे में लोकसभा चुनाव में कर्नाटक में बीजेपी की ज़मीन और मजबूत करने की ज़िम्मेदारी येदुरप्पा के कन्धों पर ही थी और वे पूरी तरह से सफल रहे।

कर्तव्यनिष्ठ
★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर वाई एस येदियुरप्पा को कर्तव्यनिष्ठ राजनेता के तौर पर पाया है।

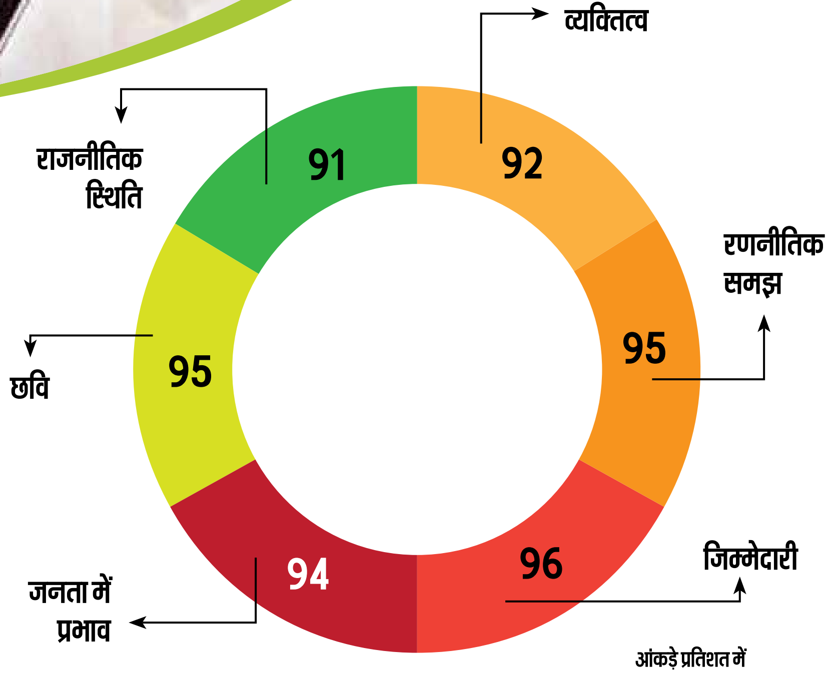

आंकड़े प्रतिशत में

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

मराठा सियासत के मजबूत क्षत्रप

शरद पवार

जो चार बार महाराष्ट्र जैसे बड़े प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे, कहते हैं जो देश के प्रधानमंत्री बनते-बनते रह गये, जिन्हें राजनीति में विरोधी भी चाणक्य की उपाधि देते हैं, सियासत के उसी सूरमा का नाम है शरद पवार। शरद पवार ने सिर्फ राजनीति के मैदान में ही बैटिंग नहीं की बल्कि वे क्रिकेट के मैदान के भी सिकंदर रहे हैं। सियासत के माहिर खिलाड़ी शरद पवार पांच दशकों से भी ज्यादा समय से राजनीति में हैं। वो जब भी कोई बयान देते हैं पूरा देश उसे गंभीरता से लेता है। शरद पवार के कद का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके विरोधी भी उनकी तारीफों के पुल बांधते नहीं थकते।

महाराष्ट्र के बारामती ग्राम में 2 दिसंबर, 1940 को पुणे में जन्मे शरद पवार का असली नाम शरतचंद्र गोविंदाराव पवार है। पवार पुणे के बीएमसीसी कॉलेज में कॉमर्स की पढ़ाई के दौरान कॉलेज के जीएस भी बने। उनके नेतृत्व और संगठन कौशल का लोहा हर कोई मानता था। इसी दौरान उन्हें यशवंतराव चव्हाण जैसे मार्गदर्शक मिले। चव्हाण कांग्रेस के कद्दावर नेता थे। उनके ही मार्गदर्शन से शरद पवार पहले युवा कांग्रेस से और फिर कांग्रेस पार्टी में सक्रिय रूप से जुड़े।

26 की उम्र में पवार पहली बार बारामती से विधायक बने और सिर्फ 38 साल की उम्र में साल 1978 में वे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बन गये। इटली मूल की सोनिया गांधी द्वारा कांग्रेस पार्टी का नेतृत्व किए जाने के विरोध में वे कांग्रेस से अलग हो गए और 25 मई 1999 को राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की स्थापना की। राजनीति, कला, साहित्य यहाँ तक कि क्रिकेट में भी उनका बराबर का दखल रहा। वे आईसीसी के अध्यक्ष और बीसीसीआआई के चेयरमैन रहे हैं।

मराठवाड़ा विद्यापीठ के नामांतर जैसा संवेदनशील मुद्दा हो या मुंबई ब्लास्ट जैसी दिल दहला देने वाली घटना हो या लातूर का महाप्रलयकारी भूकंप हो, शरद पवार का व्यक्तित्व इन अग्निपरीक्षाओं से और निखरता चला गया। पवार महिलाओं को पुरुषों के बराबर का हक देने के लिए महिला नीति लाये। महाराष्ट्र को प्रगति के रास्ते पर लाने के बाद पवार ने दिल्ली की राह पकड़ी। वे जब रक्षामंत्री बने तो महिलाओं को सेना में प्रवेश देने जैसा क्रांतिकारी कदम उठाया वहीं जब कृषि मंत्री बने तो इस भूमिपुत्र के नेतृत्व में किसानों ने खाद्यान उत्पादन के सारे रिकॉर्ड तोड़ डाले।

कामयाबी, यश-अपयश, संकट, चुनौती कुछ भी हो पवार कभी विचलित नहीं होते। वे ज़मीन से जुड़े हुए नेता हैं। उनकी दूरदर्शी सोच का चमकदार उदाहरण उनकी कर्मभूमि बारामती है जिसको देखकर अरुण जेटली ने कहा था कि अगर देश को सौ स्मार्टसिटी की सौगात देनी है तो सौ शरद पवार चाहिए। साल 2017 में शरद पवार को दूसरे सबसे बड़े नागरिक पुरुस्कार पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

शख्सियत ★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर शरद पवार को शख्सियत राजनेता के तौर पर पाया है।

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

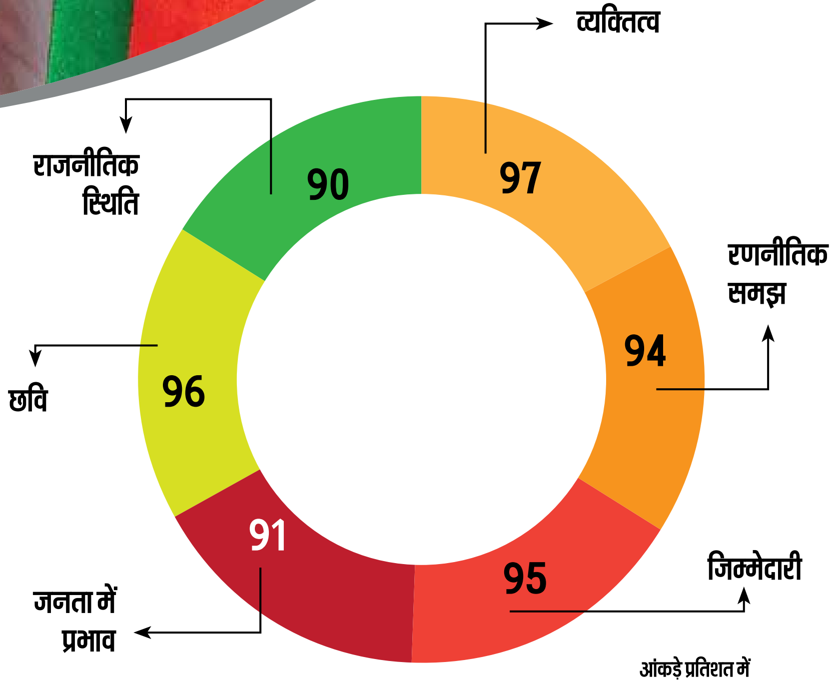

आंकड़े प्रतिशत में

संगठन पर पकड़ पार्टी पर नजर

भूपेंद्र यादव

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव भूपेंद्र यादव एक ऐसे राजनेता हैं जिन्हें पार्टी ने किसी भी भूमिका में उतारा हो वे उसमें पूरी तरह फिट बैठे हैं। राजस्थान की राजनीति से केंद्र की राजनीति में मजबूत कदम रखने वाले इस राजनेता की छवि किसी हिन्दी फिल्म के हीरो की तरह रोमांचक और चुनौतियों को पूरा करने वाले की रही है।

राजस्थान के अजमेर में 30 जून 1969 को जन्मे भूपेंद्र ने अजमेर से कानून की पढ़ाई करने के बाद ने वकालत शुरू की और सुप्रीम कोर्ट में भी प्रैक्टिस की।वे अयोध्या पर गठित लिब्रहन आयोग और स्टेंस कांड की जांच के लिये बने जस्टिस वाधवा कमेटि में सरकार की तरफ से सदस्य रहे। वकीलों की राजनीति से जुड़े यादव सन् 2000 से 2009 तक देश भर के वकीलों के संगठन अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद के राष्ट्रीय महासचिव भी रहे। उन्होंने पीआईएल यानी जनहित याचिकाएं दायर कर जन भावनाओं से कोर्ट को अवगत कराया है।

सन् 2012 और 2018 में लगातार दो बार राज्यसभा सांसद बने भूपेंद्र यादव कई भाषाओं के अच्छे जानकार हैं। वे मोदी-शाह की जोड़ी की रणनीति को अंजाम तक पहुंचाने की कला में माहिर माने जाते हैं। बिगड़ती बातों को बनाने में उनकी महारत इसी बार दिखी जब एनडीए के महत्वपूर्ण घटक लोजपा के रामविलास पासवान 2018 में एनडीए से दूरी बनाने की राह पर दिखे तो भूपेंद्र यादव उन्हें वापस खींच लाये। जब जेडीयू से सीटों पर तालमेल में मुश्किलें आयीं तो भूपेन्द्र यादव ने ही मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से बात की और बीच का रास्ता निकाला। फिर मोदी और शाह की सहमति से 17+17+6 का फाइनल फॉर्मूला भी उनकी निगरानी में ही निकला।

भाजपा में भूपेंद्र यादव की भूमिका नीतियों को कार्यरूप देने वाले राजनेता की है। वे 2013 में राजस्थान, 2014 में झारखंड और 2015 में बिहार, 2017 में उत्तर प्रदेश और 2018 में गुजरात विधानसभा चुनाव में भी पार्टी के चुनाव प्रभारी बने। इनमें बिहार के 2015 चुनाव को छोड़, राजस्थान, झारखंड, यूपी और गुजरात में पार्टी को बड़ी जीत दिलायी थी। इस बार बिहार लोकसभा चुनाव में वे भाजपा के प्रभारी थेऔर एक बड़ी सफलता दोहराने मे उनकी भूमिका बेहद अहम रही । भाजपा की अगली पीढ़ी के महत्वपूर्ण नायक की भूमिका निभाने को तैयार भुपेन्द्र यादव एक बेहद सुलझे हुए राजनेता हैं।

योग्य ★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर भूपेंद्र यादव को योग्य राजनेता के तौर पर पाया है।

FAME INDIA

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

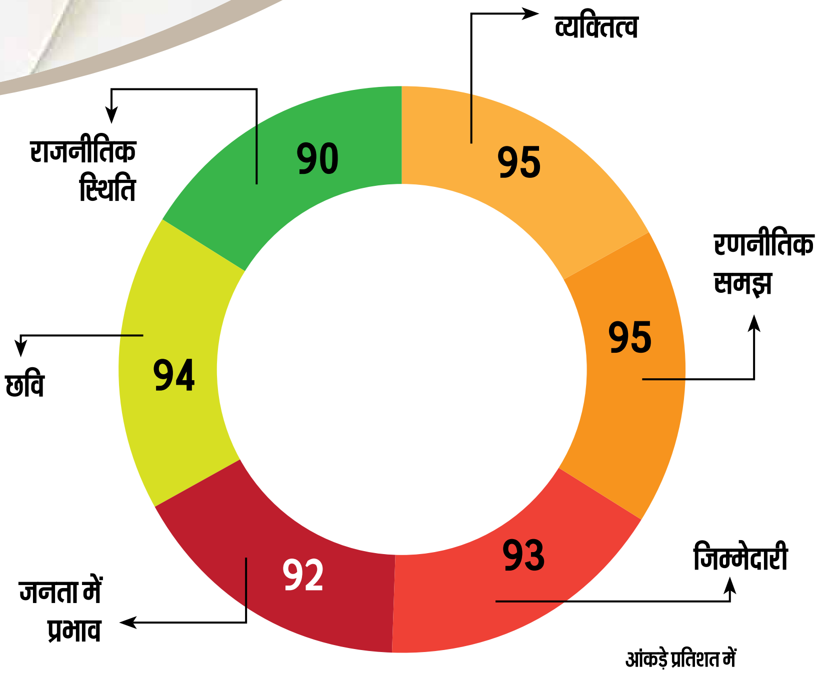

आंकड़े प्रतिशत में

दलित राजनीति की समर्पित राजनीतिज्ञ

मायावती

दलित राजनीति की पुरोधा मानी जाने वालीं मायावती एक ऐसी राजनेत्री हैं जिसने सैकड़ों वर्षों से हाशिये पर पड़े गूंगे-बहरे वंचित समाज के कण्ठ को राजनीतिक आवाज दी। बहुजन समाजवादी पार्टी सुप्रीमो मायावती चार बार उत्तर प्रदेश की बागडोर संभाल चुकी हैं और कई बार राज्यसभा की सदस्य भी रह चुकी हैं। मायावती को भारत की पहली युवा और दलित मुख्यमंत्री होने का श्रेय जाता है।

एक कड़क मुख्यमंत्री के रूप में मायावती का लोहा सारे लोग मानते हैं। सरकार पर उनकी पकड़ कभी ढीली नहीं रहती। वो अकेली मुख्यमंत्री थी, जिन्होंने अपने ही एक दागी दबंग सांसद को अपने निवास पर बुलाकर गिरफ्तार करवाया था। एक प्रशासक के तौर पर वो कुशल मानी जाती हैं।

15 जनवरी, 1956 को दिल्ली के एक दलित परिवार में जन्मीं मायावती ने बीए करने के बाद दिल्ली के कालिन्दी कॉलेज से एलएलबी किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने बीएड भी किया और अपने करियर की शुरुआत दिल्ली के एक स्कूल में शिक्षिका के रूप में की। साल 1977 में मायावती, कांशीराम के सम्पर्क में आयीं। यहीं से उनके जीवन में एक नया मोड़ आया और वे राजनीति के मैदान में उतर गयीं। कांशीराम के संरक्षण में 1984 में बसपा की स्थापना के दौरान वे काशीराम की कोर टीम का हिस्सा रहीं।

उन्होंने अपना पहला चुनाव उत्तर प्रदेश में मुजफ्फरनगर के कैराना लोकसभा सीट से लड़ा था। 5 जून 1995 को मायावती बीजेपी के सहयोग से पहली बार उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनीं। इस समय मायावती की उम्र महज 39 साल की थी। यह एक ऐतिहासिक पल था जब देश की कोई दलित महिला पहली बार मुख्यमंत्री बनी थी। इसके बाद मायावती 1997 और 2002 में फिर से बीजेपी की मदद से मुख्यमंत्री बनीं। धीरे-धीरे मायावती का कद पार्टी और प्रदेश की राजनीति में बढ़ता चला गया।

साल 2001 में कांशीराम ने मायावती को अपना राजनीतिक वारिस घोषित कर दिया। साल 2007 में वे प्रचंड बहुमत के साथ चौथी बार उत्तर प्रदेश की सत्ता पर काबिज़ हुईं। हालांकि मायावती का राजनीतिक सफ़र विवादों से अछूता नहीं रहा है लेकिन समाज की सबसे पिछली कतार से निकली एक सामान्य महिला की उपलब्धियां निश्चित ही गर्व का विषय हैं। साल 2014 में जब मोदी की सुनामी में अनेक दल अस्तित्व विहीन हो गये , उस दौर में 20 प्रतिशत मतों से बसपा की झोली का आबाद रहना मायावती होने की अहमियत को बताता है। आज भी प्रदेश की राजनीति के समीकरण उन्हीं से तय होते हैं। मायावती ने शादी नहीं की है। उनके समर्थक उन्हें 'बहनजी' कहकर संबोधित करते हैं।

मजबूत

★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर मायावती को मजबूत राजनेता के तौर पर पाया है।

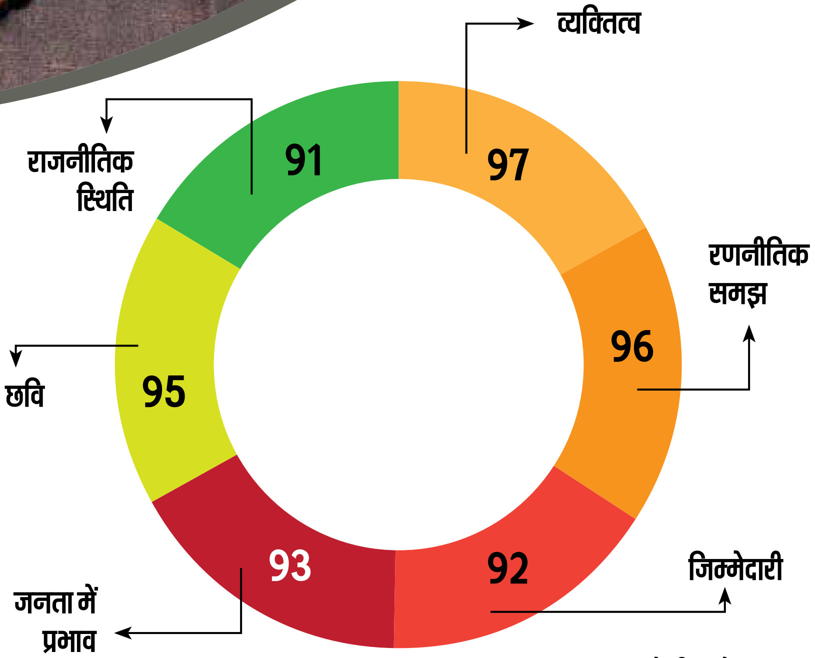

आंकड़े प्रतिशत में

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

निश्चय के पक्के, गंभीर और कर्मठ राजनेता हैं

सुशील मोदी

जेपी आंदोलन की उपज सुशील कुमार मोदी को बिहार के मृदुभाषी लेकिन दृढ़ इरादों वाले राजनेता के तौर पर जाना जाता है। उनकी छवि बिहार में भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख चेहरे के तौर पर है और उन्हें शालीन व जुझारू राजनेता की श्रेणी में रखा जाता है।

सुशील मोदी 27 जुलाई 2017 से फिलहाल बिहार के उप मुख्य मंत्री होने के साथ-साथ वित्त मंत्रालय का जिम्मा संभाल रहे हैं। इससे पहले वे सन 2005 से 2013 तक लगभग आठ वर्षों तक यही जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। बचपन से ही आरएसएस से जुड़े सुशील ने छात्र राजनीति में जेपी आंदोलन के समय कदम रखा था। वे कई बार जेल भी गये और आंदोलन के बाद संघ के आजीवन सदस्य के तौर पर प्रचार प्रसार में जुट गये।

सक्रिय राजनीति में उन्होंने कदम रखा 1990 में और पटना मध्य (अब कुम्हरार) क्षेत्र से विधायक बने। 1996 से 2004 में भागलपुर से सांसद चुने जाने तक वे बिहार विधान सभा में नेता-प्रतिपक्ष रहे। बीच में अल्पकालिक नीतीश सरकार में वे कैबिनेट मंत्री भी बने। बिहार में लालू यादव के लंबे शासन को सुनियोजित तरीके से पीआईएल के जरिये हटाने में इनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

सुशील मोदी के कुशल वित्तीय प्रबंधन का ही कमाल था कि बिहार लगातार कई वर्षों तक विकास दर में अव्वल राज्य बना। 2018 में भी बिहार 11।3 प्रतिशत ग्रोथ रेट के साथ देश में टॉप पर है। उनकी उपलब्धियों का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जहां 2005 से पहले प्रदेश का बजट महज कुछ हजार करोड़ तक सिमटा था, वहीं अब ये आंकड़ा दो लाख करोड़ पार कर गया है।

अकसर गठबंधन की सरकारें नेताओं व पार्टियों महत्त्वाकांक्षाओं के कारण बिखर जाती हैं, लेकिन सुशील मोदी और नीतीश कुमार की जोडी शायद भारतीय राजनीति में मौजूद गठबंधन की सरकारों में सार्वाधिक गैर विवादित रही है। हालांकि जब वे विपक्ष में आये तो उन्होंने अपना धर्म निभाते हुए सरकार को सड़क से विधानसभा तक एक कड़ी चुनौती पेश की।

सुशील मोदी को बिहार भाजपा में एक रुतबेदार राजनेता के तौर पर पहचाना जाता है। लोकसभा में प्रदेश की बडी जीत के पीछे इनकी महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।

शानदार
★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर सुशील मोदी को शानदार राजनेता के तौर पर पाया है।

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

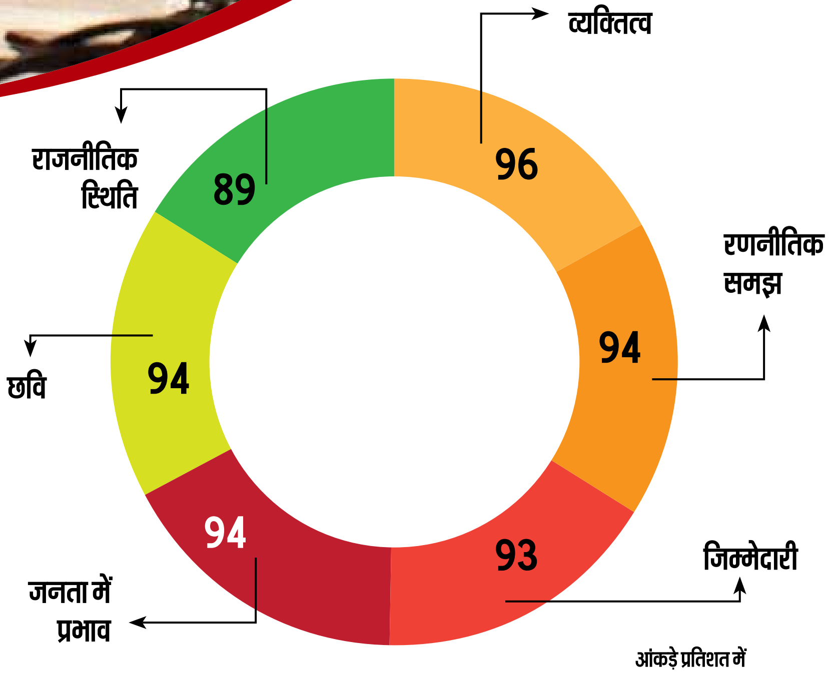

आंकड़े प्रतिशत में

हार नहीं मानने वाले युवा राजनेता हैं

अखिलेश यादव

राजनीतिक पिच के 'मिस्टर कूल' अखिलेश यादव ना सिर्फ उत्तर प्रदेश के बल्कि पूरे देश के लोकप्रिय नेताओं से एक हैं। वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुके हैं और समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष हैं। बचपन में लोग उन्हें 'टीपू' बुलाते थे। मात्र 38 साल की उम्र में प्रदेश की सत्ता पर काबिज होने वाले अखिलेश देश के सबसे बड़े राजनीतिक परिवार के चश्मो चिराग हैं। उनके पिता मुलायम सिंह यादव यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के संस्थापक हैं।

अखिलेश का जन्म एक जुलाई, 1973 में उत्तर प्रदेश में इटावा ज़िले के सैफई गांव में हुआ था। अखिलेश ने स्कूल की पढ़ाई राजस्थान के धौलपुर सैनिक स्कूल से की। इसके बाद उन्होंने मैसूर यूनिवर्सिटी से सिविल इन्वाइरन्मेंटल इंजीनियरिंग में बैचलर और मास्टर्स की डिग्री ली। अखिलेश ने यूनिवर्सिटी ऑफ सिडनी से भी पढ़ाई की। अखिलेश राजनीति में नहीं आना चाहते थे उन्हें अपना भविष्य इन्वाइरन्मेंटल इंजीनियरिंग में दिख रहा था लेकिन पिता के एक आदेश पर वे सब छोड़कर यूपी लौट आए। सपा में शामिल होने से पहले उन्होंने एक अच्छा समाजवादी बनने के लिये डा. राम मनोहर लोहिया के जीवन व उनके विचारों का गहन अध्ययन किया।

साल 2000 में मुलायम सिंह ने कन्नौज के उपचुनाव के लिए अखिलेश को टिकट दिया। लोगों का बेशुमार प्यार मिला और यादव परिवार का ये लाल कन्नौज में लाल पताका फहराते हुए संसद पहुंच गया। कुछ ही दिनों के बाद मुलायम ने अखिलेश को पार्टी की प्रदेश इकाई के नेतृत्व की जिम्मेदारी भी दे दी। वे लगातार दो बार सांसद चुने गए। अखिलेश ने पिता से राजनीतिक दांव-पेंच सीखे हैं।

सिर पर पार्टी की लाल टोपी,सफ़ेद कुर्ता-पायजामा और ऊपर से काली सदरी में संयमता, विनम्रता साथ ही दृढ़ संकल्प भाषणों ने युवा अखिलेश को देखते ही देखते प्रदेश की राजनीति का जाना-पहचाना चेहरा बना दिया। साल 2012 के चुनाव में अखिलेश यादव की कड़ी मेहनत, रणनीति और चुनाव प्रबंधन ने उन्हें नंबर 1 बना दिया। 10 मार्च, 2012 में अखिलेश यादव को उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी विधायक दल का नेता चुना गया और 15 मार्च, 2012 में वे देश में सबसे कम उम्र के मुख्यमंत्री बने। मुख्यमंत्री के रूप में अखिलेश ने उत्तर प्रदेश के विकास के रथ को आगे बढाने का काम किया।

अखिलेश ने अपनी पहचान जाति से हटकर बनाई। अपनी स्वच्छ छवि के चलते अखिलेश यूपी के युवाओं के हीरो बन गये। सपा में मचे घमासान के बाद अखिलेश की छवि और मजबूत हुई है। प्रदेश में वे युवा राजनीति के प्रतीक हैं। इस लोकसभा चुनाव में उतनी सफलता नहीं प्राप्त करने के बावजूद वे हार नहीं मानने वाले युवा राजनेता हैं।

युवा ★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर अखिलेश यादव को युवा राजनेता के तौर पर पाया है।

फेम इंडिया एशिया पोस्ट सर्वे 2019 'धाकड़ नेता' सर्वे रिपोर्ट (विभिन्न क्षेत्रों के 18320 प्रबुद्ध लोगों की राय)

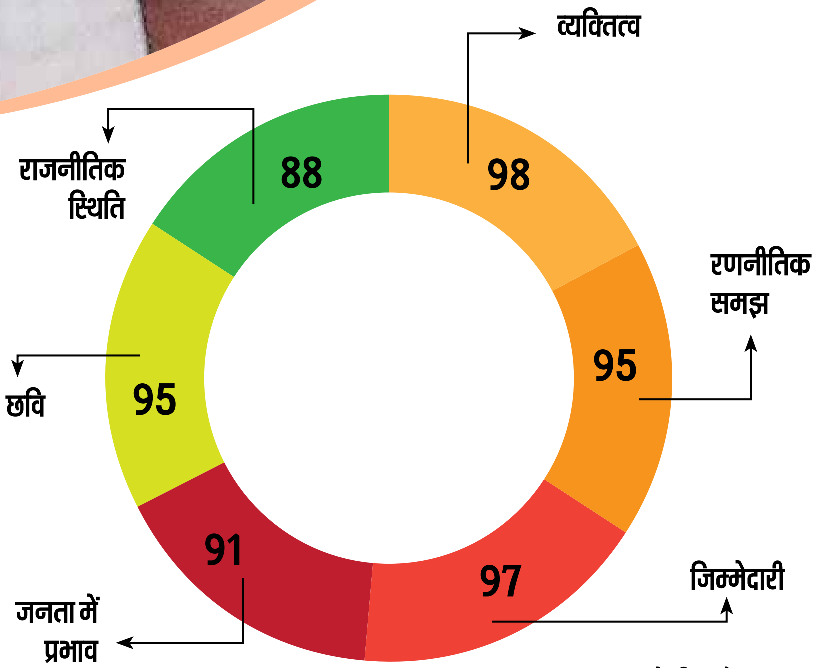

आंकड़े प्रतिशत में

केरल के डायनमिक राजनेता हैं

के सी वेणुगोपाल

युवावस्था से ही राजनीति में सक्रिय के सी वेणुगोपाल को केरल के सबसे डायनमिक राजनेताओं में गिना जाता है। जोशीले किन्तु गंभीर व्यक्तित्व वाले वेणुगोपाल को समाज के सभी वर्गों में बराबर सम्मान प्राप्त है।

कॉलेज के दिनों में ही वे केरल स्टूडेंट युनियन के प्रदेश अध्यक्ष बन गये थे। ये संस्था केरल में नैशनल स्टूडेंट्स युनियन ऑफ इंडिया यानी एनएसयूआई की शाखा है जिसका मुख्यालय अलफुजा में है। जल्दी ही कांग्रेस ने उन्हें अपने साथ मुख्य धारा में जोड़ कर प्रदेश युवा कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया।

वे लगातार तीन बार केरल विधानसभा के सदस्य चुने गये और मुख्यमंत्री ओमन चांडी के नेतृत्त्व वाली प्रदेश सरकार में पर्यटन मंत्री भी रहे हैं। हालांकि वे मूल रूप से कन्नूर के रहने वाले हैं, लेकिन उन्होंने पहले विधानसभा और अब लोकसभा दोनों ही के चुनाव में अलफुजा को अपनी कर्मभूमि बनाया। लगातार दो बार कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा पहुंचे वेणुगोपाल यूपीए 2 की मनमोहन सिंह सरकार में ऊर्जा राज्य मंत्री और फिर नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री भी रह चुके हैं।

उन्होंने नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री रहते हुए एयर इंडिया के एक बड़े स्तर पर चल रहे टिकटिंग स्कैम का पर्दाफाश किया और एयर इंडिया को लगातार हो रहे भारी नुकसान से बचाया।

गणित में स्नातक रहे वेणुगोपाल एक उम्दा बास्केटबॉल खिलाड़ी भी रह चुके हैं। वे परियारम मेडिकल कॉलेज और केरल स्पोर्ट्स काउंसिल के सदस्य भी रह चुके हैं।

फिलहाल वे केरल में कांग्रेस की स्थिति मजबूत करने में सक्रिय हैं और उन्हें ईमानदार और कर्मठ राजनेताओं में गिना जाता है। वे सन 2017 से ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटि के महासचिव हैं। वे कांग्रेस आलाकमान के करीबी लोगों में से हैं और उन्हें दक्षिण भारत के वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं में गिना जाता है।2019 में हुए लोकसभा चुनाव में पार्टी की केरल में हुई सफलता में इनकी बडी भूमिका मानी जाती है। कांग्रेस पार्टी की राजनीति में के सी वेणुगोपाल एक अहम स्थान रखते हैं।

कर्मठ
★★★★★

व्यक्तित्व, रणनीतिक समझ, जिम्मेदारी, प्रभाव, छवि और राजनीतिक दखल आदि मानकों को ध्यान में रख कर धाकड़ नेता के एशिया पोस्ट - फेम इंडिया सर्वे में देशव्यापी राय और उसके विश्लेषण के आधार पर के सी वेणु गोपाल को कर्मठ राजनेता के तौर पर पाया है।

आस्था

देश के हिन्दू तीर्थ स्थलों में बिहार के मधुबनी जिला मुख्यालय के निकट मंगरौनी गांव स्थित एकादश रुद्र महादेव का अलग ही महत्व है। ये महत्व इसलिये भी बढ़ जाता है कि यह अपने आप में दुनिया में अनोखी जगह है, जहां एक साथ शिव के विभिन्न रूपों 11 शिवलिंगों का दर्शन व पूजन का अवसर मिलता है। यहां शिव 11 रूपों महादेव, शिव, रुद्र, शंकर, नील लोहित, ईशान, विजय, भीम देवदेवा, भदोद्भव एवं कपालिश्च के दर्शन का सौभाग्य शिव भक्तों को विशेष तौर पर मिलता है।

मधुबनी में स्थापित है एकादश रुद्र महादेव का दुर्लभ मंदिर

इसके अलावा इस एकादश रुद्र मंदिर परिसर में विष्णु के विभिन्न अवतारों, श्री विद्या यंत्र, विष्णुपद गया क्षेत्र, महाकाल, महाकाली, गणेश सरस्वती आदि साथ ही आम एवं महुआ का आलिंगन-बद्ध वृक्ष, भगवान शिव, पार्वती, महा-लक्ष्मी, महा-सरस्वती यंत्र, विष्णु-पादुका आदि के भी दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है।

इस परिसर स्थित पीपल वृक्ष का भी तांत्रिक महत्तम अलग ही है। कहते हैं कि इसके स्पर्श मात्र से भूत प्रेत के प्रभाव से लोगों को मुक्ति मिल जाती है। वहीं श्री विद्या यंत्र के दर्शन व पूजन से लक्ष्मी एवं सरस्वती दोनों की कृपा बनी रहती है।

सोमवार के दिन यहां भंडारे का आयोजन किया जाता है, इस दिन यहां रुद्राभिषेक एवं षोडषोपचार पूजन करते हैं तो उनकी इच्छित मनोकामनाएं निश्चित रूप से पूरी होती हैं। पंडित जी बताते हैं कि यहां एक ही शक्ति-वेदी पर स्थापित शिव के सभी एकादश रुद्र लिंग रूपों में 10 मई से 21 मई 2000 ई। के बीच विभिन्न तरह की आकृतियां उभर आयीं।

1 महादेव - विगत 30 जुलाई 2001 को अर्द्ध-नारीश्वर का रूप प्रकट हुआ है। कामाख्या माई का ये भव्य रूप है। पांचवें सोमवारी के दिन गणेश जी गर्भ में प्रकट हुए। शिवलिंग पर ये रूप स्पष्ट नजर आती है।

2 शिव - प्रभु श्री राम ने कहा था कि मैं ही शिव हूं। इस लिंग में सिंहासन का चित्र उभरा है, जो प्रभु श्री राम का सिंहासन दर्शाता है।

3 रुद्र - भय को हराने वाले इस लिंग में बजरंगबली पहाड़ लेकर उड़ रहे है बड़ा ही अद्भुत चित्र प्रकट हुआ है।

4 शंकर - गीता के दसवें अध्याय में श्री कृष्ण ने कहा है कि मैं ही शंकर हूं। इस लिंग में श्री कृष्ण का सुदर्शन चक्र, बांसुरी और बाजूबंध स्पष्ट दृष्टिकोण होता है।

5 नील लोहित- जब महादेव ने विषपान किया था, तब उनका नाम नील लोहित पड़ गया था। इस लिंग में सांप एवं ऊँ का अक्षर प्रकट हुआ है।

6 ईशान - हिमालय पर निवास करने वाले महादेव जिसे केदारनाथ कहते हैं विगत नौ जुलाई 2001 सावन के पहले सोमवार को राजराजेश्वरी का रूप प्रकट हुआ।

7 विजय - इस शिवलिंग में छवि बन रही है जिस कारण आकृति अस्पष्ट है।

8 भीम - महादेव का एक रूप भी है। इस शिवलिंग में गदा की छवि उभर कर सामने आयी है। गदा का डंडा अभी धीरे-धीरे प्रकट हो रहा है।

9 देवादेव - ये लिंग सूर्य का रूप है। इस शिवलिंग में गदा के नीचे दो भागों से सूर्य की किरणें फूटकर शीर्ष में मिल रही है।

10 भवोद्भव - इस लिंग में उमा शंकर की आकृति प्रकट हुई है। दोनों आकृतियां धीरे-धीरे बढ़ रही है।

11 कपालिश्च- महादेव का एक रूप बजरंगबली है। बजरंगबली ब्रह्मचारी थे, इसलिये संभवतः इस लिंग में कोई चित्र नहीं उभर रहा है। किसी दिन ये शिवलिंग अपने आप पूरा लाल हो जायेगा।

कांची पीठ के शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती, बिहार राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष आचार्य किशोर कुणाल व अधीक्षण पुरातत्व-विद डॉ। फणीकांत मिश्र आदि आये तो यहां शिव के एकादश रुद्र का अलौकिक रूप देख भाव विह्वल हो गये। उन्होंने कहा कि ये अपने आप में धार्मिक दृष्टिकोण से अद्वितीय पूजन व तीर्थ स्थल है।

बाबा जी का कहना है कि सभी शिव भक्तों को मात्र एक बार आकर इन शिवलिंगों उभरी हुई आकृतियों को देखे तो पता लगेगा कि ऐसे शिवलिंग विश्व में कहीं भी नहीं है

गौरतलब है कि प्रसिद्ध तांत्रिक पंडित मुनीश्वर झा ने 1953 ई। में यहां शिव मंदिर की स्थापना की थी। इस मंदिर में स्थापित सभी शिवलिंग काले ग्रेनाइट पत्थर के बने हुए हैं जिनका प्रत्येक सोमवार शाम को दूध, दही, घी, मधु, पंचामृत, चंदन आदि से स्नान होता है। श्रृंगार के लिये विशेष तौर पर कोलकाता से कमल के फूल मंगाये जाते हैं। प्रधान पुजारी कहते हैं कि जो व्यक्ति अपने पितरों का पिंडदान करने नहीं गया नहीं जा पाते उनके लिये यहां गया क्षेत्र बना है जहां पिण्डदान कर मुक्ति पायी जाती है।

भारत के समृद्ध भविष्य के लिए

हरित ऊर्जान्वयन

पीएफसी – नवीकरणीय ऊर्जा के सशक्त विकास को प्रतिबद्ध

जलवायु परिवर्तन पर इसकी राष्ट्रीय कार्य योजना के अनुरूप, भारत सरकार ने नवीकरणीय ऊर्जा विकास को प्राथमिक रूप से प्रोत्साहित किया है। पीएफसी नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के विकास हेतु अगले पाँच वर्षों के लिए विशेष ब्याज दर पर ₹15,000 करोड़ की वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के लिए वचनबद्ध है। क्योंकि हर हाल में एक स्वच्छ और हरित भविष्य की रचना ही पीएफसी का ध्येय है।

पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(एक नवरत्न पीएसयू)
पंजीकृत कार्यालय: "ऊर्जानिधि", 1, बाराखम्बा लेन, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001
फोन: 011-2345 6000; फैक्स: 2341 2545; वेबसाइट: www.pfcindia.com

पीएफसी-54 ईसी कैपिटल गेन टैक्स छूट बांड जारी करने के लिए एक पात्र कंपनी

/pfcindia पर हमें फॉलो करें

naa

सर्वे रिपोर्ट

कौन है धाकड़ नेता ?

लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके नेतृत्त्व में एनडीए को मिली अभूतपूर्व सफलता पर देश ही नहीं दुनिया भर की निगाहें लगी थीं. हर किसी के दिमाग में एक ही प्रश्न घूम रहा था कि किसे मिलेगा सत्ता का ताज और कौन रहेगा कुर्सी से मोहताज? हालांकि इस बार अगर सबसे ज्यादा असर किसी एक नेता का दिखा तो वे हैं खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लेकिन उन प्रभावशाली नेताओं की भी अनदेखी नहीं की जा सकती जो अपने व्यक्तित्व और कार्यकलापों से जनता पर अपना प्रभाव जमाने में कामयाब हुए हैं।

भारतीय लोकतंत्र की एक और खासियत है कि यहां मतदाता उन नेताओं को सर आंखों पर बिठाते हैं जो उनके लिये सोचते हैं। नरेंद्र मोदी के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ और पिछले पांच साल में लोक-कल्याण के उनके प्रयासों को जनता ने जी भर के सराहा। चाहे नोटबंदी योजना रही हो या जीएसटी, उज्जवला योजना हो या गरीबों के लिये मुफ्त आवास की योजना, आयुष्मान भारत स्वास्थ्य बीमा, स्वच्छ भारत अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, गरीबों के जन-धन खाते और उनमें सीधे पेंशन, सब्सिडी आदि की रकम पहुंचाने जैसी कई योजनाएं ऐसी रहीं जिन्होंने सरकार के साथ आम जनता को जोड़ा।

हालांकि नरेंद्र मोदी निर्विवाद रूप से सबसे बड़े जननायक के रूप में उभरे हैं, लेकिन उनके अलावे भी कई ऐसे राजनेता रहे जिन्हें जनता ने जोरदार समर्थन दिया। कुछ ने क्षेत्रीय तो कुछ ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी धाक जमायी है।ये जानना जरूरी है कि जन-साधारण की नब्ज पकड़ने में कामयाब होने के लिये उन राजनेताओं की क्या-क्या खूबियां काम आयीं? किन गुणों और कलाओं से लोग प्रभावित हुए और उन्हें अपना सिरमौर बनाया? हमने अपने सर्वे में इन तथ्यों पर विशेष ध्यान रखा कि कोई भी जन-नायक कितनी अवधि में किन-किन प्रयासों से किस ऊंचाई तक पहुंचा है? उनकी ये उपलब्धि कितनी स्थायी है? सर्वे में एक सर्वमान्य नतीजा सामने आया कि पृष्ठभूमि और पुराने कार्य मायने तो रखते हैं, लेकिन कई राजनेता अपने समझदारी भरे प्रयासों और कार्यकुशलता से इतिहास को भी बदल देने का माद्दा रखते हैं। कई जमीन से जुड़े नेता ऐसे भी रहे जो परिवार और वंश की विरासत पर भारी पड़ते दिखे।

इस अंक में हमने देश भर के टॉप 25 धाकड़ नेताओं, उनकी खासियतों और खूबियों का आकलन किया है।

आशंका

ceo@fameindia.co

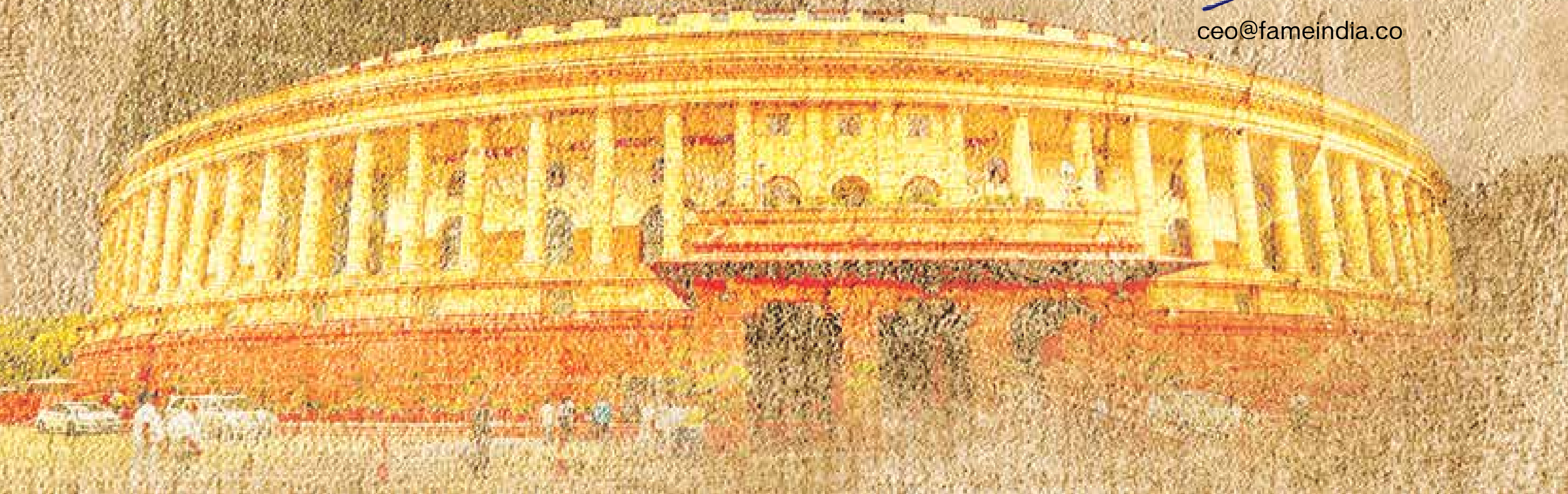

SriSri

TATTVA

shuddhta ka naam

350+ शुद्ध, आयुर्वेदिक और ऑर्गेनिक उत्पाद
आपके नज़दीकी दुकानों में उपलब्ध हैं!

फ़ूड * पर्सनल केयर * हेल्थ केयर * अगरबत्ती और फ्रेग्रेन्स (खुशबुओं) की रेंज * होम केयर

1800-120-8030 | SriSriTattva

पिछले पांच दशकों से निरंतर कार्य करते हुए, लाखों लोगों के जीवन को और बेहतर बनाने तथा विद्युत क्षेत्र की संपूर्ण वेल्यू चेन में एक अग्रणी वित्तीय सेवा प्रदाता होने के कारण, हम विद्युत और प्रगति के पर्याय के रूप में, एक ब्रांड बनकर उभरे हैं। वित्तीय वर्ष 2019 में हमारा प्रदर्शन हमारी सफलता का प्रमाण है जहां हमने ₹5,764 करोड़ का वार्षिक लाभ अर्जित किया है। ₹34,000 करोड़ से अधिक निवल मूल्य के साथ हम देश-भर में स्थित अपने 25 कार्यालयों द्वारा ग्राहकों के लिए आसान पहुंच सुनिश्चत करते हैं तथा हम अपनी असाधारण सफलता के लिए अपने ग्राहकों तथा देश के लोगों द्वारा दर्शाए गए विश्वास के लिए इनके ऋणी हैं।

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

पूरे भारत में विद्युत उत्पादन, पारेषण और वितरण परियोजनाओं के वित्तपोषण में भागीदार

◆फॉर्च्यून इंडिया 500 कंपनी ◆गोल्डन पीकॉक अवार्ड ◆सीआईएमएसएमई अवार्ड ◆एनएसई मार्केट अचीवर अवार्ड

@OfficialREC @reclimited REC Limited पर फॉलो करें